निर्मला योग

द्विमासिक वर्ष 1 अंक 4 नवम्बर-दिसम्बर-1982

ॐ त्वमेव साक्षात, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्त्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

जय श्री माताजी

महाशक्ति निर्मला देवी का रहस्य

स्वयं भगवान कृष्ण जी कहते हैं—

त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी । त्वमेवाद्यां सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका ।।
कार्यार्थे सगुणात्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम् । परब्रह्म स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा ।।
सर्वस्वरूपा सर्वेण सर्वाधारा परात्परा । सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया ।।
सर्वज्ञा सर्वतो भद्रा सर्वमंगल मंगला ।।

अर्थ—तुम्ही विश्वजननी मूलप्रकृति ईश्वरी हो तुम्ही सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्याशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो। यद्यपि वस्तुत: तुम स्वयं निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। तुम परब्रह्मस्वरूप, सत्य नित्य एवं सनातनी हो परमतेज स्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने हेतु शरीर धारण करती हो। तुम सर्वस्वरूपा सर्वेश्वरी सर्वाधार एवं परात्पर हो। तुम सर्वज्ञ सर्वप्रकार से मङ्गल करने वाली एवं सर्व मङ्गलों की भी मङ्गल हो।

"सर्वोपेता तद्दुर्शनात्" ।

वह पराशक्ति सर्वसामर्थ्य से युक्त है क्योंकि यह प्रत्यक्ष देखा जाता है।

"किं तत्कार्या जगत्वस्मिन यतु शक्तया न सिद्धयति ।

शक्ति से सुख है और उसी में सब कुछ है।

त्वं परा प्रकृतिः साक्षाद् ब्रह्मणाः परमात्मना । त्वत्तो जातं जगतसर्वं त्वं जगजननी शिवे ।।

हे शिवे ! तुम्ही परब्रह्म परमात्मा की पराप्रकृति हो, तुम्ही से सारे जगत की उत्पत्ति हुई है। तुम्ही विश्व की जननी हो।

अचिन्त्यापि साकारशक्ति स्वरूपा । प्रतिव्यक्तयधिष्टानसत्वैकमूर्तिः ।।
गुणातीत निर्द्वन्द्व बोधैकगम्या । त्वमेका पर परब्रह्म रूपेण सिद्धा ।

अर्थ—तुम अचिन्तनीय होते हुए भी साकार मूर्तिस्वरूपा हो। प्रत्येक प्राणी में सत्वगुण रूप में विशेष भाव से विराजमान रहती हो तथा गुणातीत हो। केवल तत्त्व ज्ञान से ही तुम जानी जाती हो। तुम्ही परब्रह्मरूप से प्रसिद्ध हो। तुम्हारा वर्णन करके क्या कोई पार पा सकता है।

न मीमांसका नैव कालादितर्का न सांख्या न योगा न वेदान्तवेदः ।
न वेदा विदुस्ते निराकारभावं त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ।।

सङ्कलनकर्ता—**राउल बहन**

सम्पादकीय

साधारणतया संसारिक जीवन से मुक्ति ही मोक्ष माना जाता है। आध्यात्म के मार्ग पर चलने वालों का लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति ही है। किन्तु वास्तव में यह मोक्ष कब और कैसे प्राप्त होता है किसी को ज्ञात नहीं है।

सन्त श्री ज्ञानेश्वर ने इसकी व्याख्या की है कि वास्तविक जीवन मुक्त योगी वह है जिसका चित्त सदैव ब्रह्मरन्ध्र में है और जहाँ पर नाद हो रहा है तथा मूलाधार से सहस्त्रार तक निःशब्द और निरन्तर एक नाड़ी है।

यह स्थिति परमपूज्य श्री माताजी की कृपा से सहजयोग द्वारा ही सम्भव है। हम अत्यन्त ही भाग्यशाली हैं कि श्री माताजी ने हमें हमारे कर्मों से छुटकारा दिलाकर इस स्थिति को प्राप्त करने के योग्य बना दिया है।

श्रद्धा एवं शरणागत भाव से अपने को इस मार्ग पर आगे बढ़ाना और दूसरों का मार्गदर्शन ही हमारा कर्तव्य है।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ० शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर०डी०कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : श्री मार्क टेलर
१६५० ईस्ट फ़िफ्थ एवेन्यू
वैन्कूवर, बी.सी. कनाडा-
वी ५ एस. १ एम २

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पेट्रूनीया
२.५, अदम्स स्ट्रीट, १/ई
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मेन्सन
गंजवाला लेन बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००६२
श्री राजाराम शंकर रजवाड़े
८४०, सदाशिव पेठ, पुणे-४११०३०

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विसेज लि., १६० नार्थ गावर
स्ट्रीट लन्दन
एस.डब्लू. १ २ एन.डी.

इस अंक में .... पृष्ठ

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. तत्व की बात-३ ... ३
४. एक सहजयोगी का पत्र १०
५. गुरु पूजा ... ११
६. कविता ... २३
७. आरती ... २४
८. मन्त्र ... २४

तत्व की बात-३

गांधी भवन,
दिल्ली विश्वविद्यालय
१६ फरवरी १९८१

सहज-योग की तारीफ तो मैंने बहुत खोलकर कर दी। लेकिन असलियत यह है कि; नहीं—यह तो जानने की बात है ! हमारे यहाँ भी अहंकार कुछ कम नहीं है विश्व में। लेकिन बेकार की चीज का हमें अहंकार हो जाता है और यह इस तरह कुछ बेकार की चीजें हैं कि उसके बारे में हम लोग जानते हुए भी कि महा बेवकूफी है, हम उसे करते रहते हैं। सहज-योग जो है आपको सत्य के दर्शन कराता है। सत्य जो है, था और रहेगा। उसके मामले में आप कोई (compromise) समझौता नहीं कर सकते कि आप कहें कि "चलिये, माँ ऐसा ही क्यों नहीं कह देते आप, जो काम बन जाए। इस तरह से बोल दीजिये तो अच्छा रहेगा। इस तरह से कह दीजिये तो अच्छा रहेगा।" ऐसी कोई बात सत्य नहीं है। जो है, सो है, वो उसी तरह से रहना है।

और अगर आप सत्य को नहीं मानना चाहोगे तो उसका आपको भोग उठाना पड़ेगा। माने ये नहीं कि सत्य आपको हानि देता है लेकिन सत्य को अगर आप छोड़ दें तो आप असत्य पर उतर आये। और जब असत्य पर उतर आये तो असत्य तो हानिकारक है ही, वो आपको तकलीफ देगा। ऐसा भी हुआ है कि बहुत से लोग सहज-योग में आये, बहुत कुछ ऊँचे उठ गये; बड़ा उन्हें लाभ हुआ; बहुत कुछ पा लिया; बहुतों को पार किया; उसके बाद उन्होंने सहज-योग छोड़ दिया। उसके बाद आप एक साल बाद आये, "कि माँ मुझे तो बीमारी हो गई अब मैं क्या करूँ ?" ऐसे भी बहुत से लोग होते हैं। तो कहने लगे कि "देखो, सहज-योग ने हमें सजा दे दी।" ऐसे भी बहुत लोग होते हैं। सहज-योग ने आपको सजा नहीं दी लेकिन अगर आप किसी की छत्र-छाया में बैठे हैं और उसे छोड़कर आप बाहर जायें और आप पर अगर बरसात आ जाए तो क्या आप कहिएगा कि इस छत्र-छाया ने ही आपको तकलीफ दे दी ? आपने ही अपनी छत्र-छाया मिटा दी और आप बाहर चले गये। पर सहज-योग में रहने से ये छत्र-छाया है, ये आपके ऊपर छाई हुई है, तो ये वास्तव में ये छत्र-छाया का आपके ऊपर उपकार है या आपका उस छत्र-छाया पर उपकार है ? यह तो छत्र-छाया का उपकार है, परम उपकार है। उसने आपको अपनाया और अपने अन्तरगत् रखा और आपकी छोटी-छोटी बातोंका भी ख्याल रखा।

सहज-योग में जो बहुत सी बातें होती हैं, उनमें से जैसे कि मैंने आपसे बताया था कि लक्ष्मी जी का भी प्रसाद आपको मिलता है। और लक्ष्मी जी का प्रसाद क्या होता है, यह भी मैंने आपको बताया कि नाभि चक्र में श्री लक्ष्मीजी विराजती हैं, उनकी शक्ति विराजती है। और लक्ष्मीजी कैसी हैं ? इसका भी वर्णन मैंने आपको बताया था कि श्री लक्ष्मीजी जो हैं उनमें और पैसे वाले में महान अन्तर होता है। लक्ष्मीजी कमल पर खड़ी हैं उनके हाथ में कमल है और एक हाथ देने वाला और एक हाथ आश्रय में। कमल पर ये खड़ी हैं सो

लक्ष्मीजी देखने में तो काफी भारी-भरकम दिखाई देती हैं। कभी आपने लक्ष्मीजी को एकदम ऐसा न देखा होगा जैसे कि आजकल की beauty queens होती हैं। लेकिन उनकी तन्दरुस्ती काफी अच्छी है क्योंकि उनके अपने अन्दर बहुत कुछ ज्यादा पानी का समावेश है। उनका जन्म ही पानी से हुआ है न। जिसका जन्म पानी से हो, उसके अन्दर तो पानी बहुत होना पड़ता है। उसकी भी वजह होती है। उसके अन्दर पानी न हो तो उनके अन्दर जो इतने चक्र चलाने पड़ते हैं उसके लिये buffer (बफर), उसके लिये रुकावट, उसके लिये एक बीच में बचाव और कुछ नहीं रह जाता इसलिये पानी शरीर (body) में होना बहुत जरूरी होता है और इस वजह से भारी-भरकम होती हैं। तो भी वो कमल के ऊपर खड़ी हैं, माने उनकी तबियत से इन कदर, शब्द नहीं हैं हिन्दी में-पर जिसे कहना चाहिए कि इस कदर वो सधी हुई हैं कि तबियत से वो इस क़दर सधी हुई हैं कि पूरा बैलेन्स (balance) करके और उनका कोई वजन ही नहीं डालतीं वो कमल पर कोई उनका वजन नहीं डलता, कि अपना बोझा वो किसी पर नहीं डालतीं। आप देख लीजिये लोग कितना बोझा दूसरों पर डालते हैं। अब जैसे कोई मेहमान आ गये। आते ही साहब, हमारे खासकर सहजयोगी लोग भी कभी कभी ऐसा काम करते हैं, यह खासियत हिन्दुस्तानी सहजयोगियों की भी होती है।

जैसे कि आप कहीं से आये, अब देहली में आ गये कोई सहजयोगी। तो वो पहले कहेंगे कि साहब यहाँ कुछ आराम हमें नहीं मिल रहा और यहाँ पर हमें खाने को ठीक नहीं मिल रहा है। यहाँ यह इन्तजाम ठीक नहीं है, यहाँ कोई इन्तजाम ठीक नहीं है जैसे अपने घर में तो ये लोग बिल्कुल आलीशान बगीचों में ही रहते हैं। यहाँ आते ही अब सब उनको सब पता हो जाता है कि साहब यहाँ की यह चीज ठीक नहीं है, यहाँ फलानी चीज अच्छी नहीं है। कोई अगर बम्बई आये तो उनका भी यही हाल है। मतलब आप एक काँटा बनकर रहते हैं, हर जगह की तरह आप फूल जैसे नहीं रहते, आप काँटे की तरह हैं। हर आदमी को आप चुभते रहते हैं। हर आदमी को महसूस होना चाहिये कि आप आये हुए हैं, आप एक विशेष चीज हैं। आप कोई न कोई विशेष चीज हैं। इस तरह से हम लोग अपना जीवन जो है वो सोचते हैं कि हमने बहुत महत्व पूर्ण कर लिया और जिस आदमी पर जितना ही ज्यादा रुपया होगा वो उतना ही ज्यादा नखरे कर रहा है। जितना आदमी गरीब होगा, अपने देश में, उतने ही उसके कम नखरे होंगे। लेकिन जितना आदमी रईस हो जायेगा उतने ही उसके नखरे ज्यादा हो गये और लक्ष्मीजी के कोई नखरे नहीं बेचारी के। वो तो कमल पर अब भी खड़ी हुई हैं और पूरे समय खड़ी ही रहती हैं कभी यह भी नहीं कि मैं थक गई हूँ, मैं थोड़ी देर को लेट ही जाऊँ। कोई भी समय वो इस कमल पर अपने शरीर को सम्भाले हुए, इतने बड़े शरीर को सम्भाले हुए खड़ी रहती हैं, बिल्कुल हल्की सी। किसी को महसूस ही नहीं होता है। यह असली लक्ष्मी तत्व की निशानी है। जिस आदमी में वास्तविक लक्ष्मी है, उसका कहीं भी बोझा नहीं लगता। ऐसा आदमी जहाँ भी रहता है उसकी सुगन्ध, उसका सौरभ सब तरफ फैलता है लेकिन उसकी कोई भी चीज महसूस नहीं होती। कहीं भी वो आपको नहीं जताता है कि आप पैसे वाले हैं या आप पैसे वाले नहीं है, या उसके पास ज्यादा पैसा है या आपके पास इस चीज की कमी है। वे तो इस तरह से रहता है कि किसी को पता ही नहीं चलता कि कैसे आये और कैसे गये। वो इस तरह से जीवन बिताता है कि जैसे किसी का पता ही नहीं चलता लेकिन अधिकतर पैसे वाले तो पहले बीन बजा कर घूमेंगे कि साहब मैं बड़ा पैसे वाला हूँ। कुछ नहीं तो अजीब तरह का horn लेकर रास्ते में बजाते चलेंगे जिससे कि लोग मुड़ २

कर देखें कि कौन गधा चला जा रहा है। हर चीज का दिखावा (show) होना चाहिये। हर चीज़ की artificiality होनी चहिये। एक एक तमाशा आदमी खड़ा कर देता है अपने नाम से क्योंकि वो पैसे वाला है। यह लक्ष्मीजी की बात नहीं, लक्ष्मी बहुत ज्यादा एकदम ऐसे तरीके से रहती हैं, सम्भली हुई, सधी हुई कि किसी को पता ही न चले। एक हाथ से उनके दान होना चाहिये, वह दान भी किसी को पता नहीं होना चाहिये कि दान हो रहा है। जैसे बह रहा है, जा रहा है, दे रहा है; लेने का सवाल नहीं और दूसरे हाथ से आश्रय होना चाहिये जो उनके आश्रित हैं वो सब आशीर्वादित होने चाहियें, बजाय इसके कि बहुत से मालिक अपने नौकरों को मारते हैं, पीटते हैं, यह करते हैं—नहीं, आश्रित माने उनको पूरी तरह से जो लक्ष्मी जी के आश्रित होते हैं उनको पूरी तरह से वरद हस्त होता है, पूरा वरदान होता है।

और उनके दोनों हाथ में कमल होते हैं। कमल गुलाबी रंग के होते हैं और गुलाबी रंग के कमल इस बात के द्योतक हैं कि वो प्रेम की निशानी हैं। गुलाबी रंग जो है वो उनके प्यार की निशानी, प्रेम की निशानी; वो बिल्कुल ही नाजुकतम पंखड़ियों में भंवरे जैसा काँटे वाला प्राणी होता है उसे भी स्थान देती हैं; कहीं से भी चला आये उसे रहने का इन्तजाम है। हर समय उसके लिये इन्तजाम रहता है। ऐसा आज तक मैंने तो कोई पैसे वाला नहीं देखा कि उसके दरवाजे कोई चला आये और अच्छा भाई तुम्हें कोई जगह नहीं, आओ मेरे घर सो जाओ। वो तो चार चार दरबान लगा कर रखेगा कि कोई अच्छा भी भला आदमी हो तो उसको पीट के, मार के भगा दें।

इस प्रकार हमारे अन्दर जो लक्ष्मीजी का तत्व है वो हमारे नाभि चक्र में है। इसके बारे में मैंने आपसे बता दिया। जैसा वो है वैसा ही है। उस तत्व को हम बदल नहीं सकते। बाहर का आप सब कुछ बदल दीजिये लेकिन उसका तत्व जो है वही बना रहेगा। तत्व न बदल सकता है, न ही उसको आप बदल सकते हैं।

सुषुम्ना पथ पर अगर आप रहें तो आपको कोई बीमारी नहीं हो सकती—विशेषकर कैंसर नहीं हो सकता। अगर आप left को या right को किसी भी अतिशयता पर चले जायें तो आपको कैंसर (cancer) हो सकता है। इसलिये आपको बीचों बीच रहना है।

सहजयोग में आने के बाद हजारों लोगों ने, हजारों लोगों ने सिगरेट पीना एकदम छोड़ दिया। इसी तरह से जिनका गुरुतत्व ठीक हो गया उन्होंने शराब वगैराह एकदम छोड़ दिया।

अब जो विशुद्धि चक्र है उसकी विशेषता यह है कि विशुद्धि चक्र, जब हमने गर्दन उठाई और जब हम मनुष्य बन गये तभी विशुद्धि चक्र पूरी तरह से प्रादुर्भावित हुआ। इससे पहले इसका जो काम था वो पूरा नहीं हुआ था और अब जो है 16 इसकी कलाएं हैं। श्रीकृष्ण को 16 कला कहते हैं। और उसी तरह से 16 उसके subplexus हैं। जिसका विशुद्धि चक्र ठीक होगा उसका मुखड़ा सुन्दर होगा, तेजस्वी होगा। उसकी आँखें तेजस्वी होंगी, उसके नाक नक्श तेजस्वी होंगे और उसके अन्दर एक तरह का बहुत ही ज्यादा detached सा भाव होगा जैसे कि ड्रामा जैसा। उस आदमी के मुख पर ऐसा लगेगा जैसे कि ड्रामा चल रहा है। एक पल में वो नाराज होगा और दूसरे ही पल में वो हंसता रहेगा। बस उसकी अठखेलियाँ चलती रहेंगी।

जिसका विशुद्धि चक्र खराब हो जाता है उसकी शक्ल खराब हो जाती है, पहली बात। अजीब सी विकृत सी शक्ल हो जाती है, अजीब सी भयानक सी उसकी शक्ल दिखाई देने लगती है, कभी डरावना सा, कभी डरा हुआ सा। अब हम लोग इतने ड्रामे

beauty–क्या क्या करते हैं न हम लोग, उसके लिये धन्धे कोई करने की जरूरत नहीं। आप अपना विशुद्धि चक्र ठीक कर लीजिये आपकी शक्ल दुरुस्त हो जायेगी-बहुत शक्ल दुरुस्त हो जायेगी और इसके अलावा, जिसकी विशुद्धि चक्र की पकड़ हो जाती है उस आदमी की आवाज बहुत कर्कश या बिल्कुल धीमी या वो मधुरता को खो बैठता है। और दूसरी चीज़ यह है कि हमारे अन्दर विशुद्धि-चक्र की जो left-side है, जिसे कि हम कह सकते हैं कि हमारे चक्र के left-side में विराजती है वो विष्णु-माया है, माने श्रीकृष्ण की बहन जो विष्णु-माया थी। अब जब हमारे भाई-बहन के रिश्ते खराब हो जाते हैं किसी भी माने में, तो यह चक्र खराब हो जाता है। जब भाई बहनों की कद्र नहीं करता, अपनी बहनों को सताता है, तो भी चक्र खराब हो जाता है। लेकिन जब संसार में हम हर औरत की ओर गंदी नजर से देखते हैं और हमारे अन्दर यह विचार नहीं रह जाता है कि यह हमारी बहन है तब यह चक्र बहुत ही बुरी तरह से खराब हो जाता है। और जब left विशुद्धि खराब हो जाती है तब आदमी को यह लगता है कि मैंने बड़ी गलती करी, अन्दर से उसे लगता रहता है और वो एक तरह से guilty आदमी हो जाता है। कभी-कभी यह guilt इतना बढ़ जाता है कि उसमें से अनेक पाप होने लग जाते हैं। guilt-complex उसके अन्दर आ जाता है। इसलिये सहज-योग में इसका मन्त्र है, अंग्रेजी में तो कहते हैं "I am not guilty" और हिन्दी में कहते हैं "कि माँ हमने कोई गलती नहीं करी जो तुम माफ नहीं करो।" right-side की जो विशुद्धि है ये विट्ठल-रुकमणी वाले कृष्ण, जब कि कृष्ण राज्य कर रहे थे तब। जब हम अपने राज्य में विराजते हैं, माने हमारा राज्य परमात्मा का राज्य हुआ, और जब परमात्मा के राज्य में हम विराजे हुए हैं और तब भी हम भिखारी जैसे बक बक करते हैं, और लोगों से रूपया माँगते हैं, पैसे माँगते हैं और उनकी चापलूसी करते हैं और उनके सामने अपनी पेशानी झुकाते हैं तब right विशुद्धि पकड़ जाती है। जो आदमी अपनी पेशानी अपनी किसी गरज के लिये दूसरों के सामने झुकाता है या किसी भी नीच आदमी के सामने इसलिये झुकाता है कि उसे वो गुरू या और कुछ उसे मानता है तो उसकी right विशुद्धि पकड़ जाती है और right विशुद्धि पकड़ने के नाते बहुत तरह के complications होते हैं विशेषकर कि cancer की बीमारी इसमें हो सकती है। क्योंकि जो लोग चापलूसी में जाकर इसके पैर छू रहे हैं उसके पैर छू रहे हैं, उसके ये कर रहे हैं, करते हैं, जान लें कि आखिर आपको परमात्मा के सिवाय और किसी के सामने अपना सिर नहीं झुकाना है। और किसी के सामने सर झुकाने की जरूरत भी क्या है, वह दे भी क्या सकता है? बहुत से लोग हमें कहते हैं कि वो सन्त-साधु थे हमने माथा उनके सामने झुकाया। अधिकतर तो ढोंगी और भोंदू लोग हैं, नहीं तो 420, या दानव और राक्षस ही हैं। अच्छा अगर यह नहीं हुए तो समझ लीजिये एक साधु-सन्त है, वो पार भी है, समझ लीजिये, तो भी इन्सान है, भगवान तो नहीं है। अवतार तो नहीं है। जब तक कोई अवतार नहीं हो तो अपना सर झुकाने की क्या जरूरत है? तुम भी कल हो सकते हो पार, और तुम भी कल सन्त हो सकते हो। लेकिन जो अवतार है उसके सामने सर झुकाना दूसरी बात है क्योंकि उसके सामने सारे चक्र खुलते हैं। सिर्फ अवतार के सामने ही सर झुकाना चाहिये। यह दूसरी बात है कि अपने माँ बाप हैं उनके सामने सर झुकाओ, वो तो एक रोजमर्रा का एक व्यवहार है उसकी बात दूसरी है। शादी में गये, माँ बाप के पैर छू लिये, बड़ों के पैर छू लिये ये बात दूसरी है। एक बार वो कर लिया वो तो सम्मत है।

लेकिन हर बार जिसको देखिये कि वो चले आ रहे हैं महाशयजी उधर से, और कहा कि साहब यह तो minister साहब के यहाँ बिल्कुल उनके चमचे हैं चले चार और चमचे उनके पीछे उनके पैर छूने

के लिये। इस तरह की जिन लोगों की दशा होती है वो इस कदर दुख में पड़ जाते हैं और इतनी तकलीफें उठाते हैं कि मैं उन लोगों को ठीक करते करते तंग आ गई। क्योंकि मनुष्य को अपनी इज्जत और अपनी शान का पता नहीं। ये चक्र जो है इसने आपको शान दी जिसने आपके सर को ऊपर उठाया। यों नहीं दी कि इसको आप हर जगह झुकाते फिरें और अपने को नीचे गिराते फिरें। आप बहुत बड़ी चीज हैं। भगवान ने आपको एक अमीबा से इन्सान बनाया और जब आप इस हालत में आ गये तो आपको जरूरी है कि आप इसकी इज्जत करें अपनी इज्जत करें और अपनी जो शान है उसको समझें। दूसरी बात यह है कि बहुत से लोगों का यह भी है कि दूसरों से डरते रहते हैं। यह भी चक्र है इससे left विशुद्धि पकड़ जाती है। जब आप किसी आदमी से डर जाएं, वास्तव में आप बेकार ही में डर रहे हैं तब आपको left विशुद्धि पकड़ सकती है।

विशुद्धि चक्र बहुत महत्वपूर्ण है और विशुद्धि चक्र के पकड़ने से अनेक तरह की बीमारियाँ आती हैं। सबसे खराब बात यह है कि जब आप पार भी हो जाते हैं तो भी आपको vibrations नहीं आते। आपको महसूस नहीं हो पाता। आपकी जितनी nerves हैं हाथ की मर जाती हैं तो हाथ पर आपको महसूस नहीं होता। और लोग कहते हैं कि माँ हमको अन्दर तो महसूस हो रहा है पर हाथ पर महसूस नहीं होता और इसलिये उनको परेशानी हो भी जाती है। सबसे बड़ी खराबी विशुद्धि की यह है। अगर आपने गलत मन्त्र कहे हैं, आपने किसी ऐसे आदमी से मन्त्र लिया है जो अनाधिकार है, जिसने आपको झूठे मन्त्र दिये हैं, इस सबसे आपकी left विशुद्धि पकड़ती है और इस left विशुद्धि का इलाज यही है कि उस मन्त्र को जो है जागरूक कराना। अगर कोई मन्त्र जागरूक नहीं है तो उसे रटना ही नहीं है। और मन्त्र जागरूक तभी होता है जब कोई realised soul आपको मन्त्र बताये और वो भी निदान कर बताये कि आपको कहाँ तकलीफ है, कौन सी तकलीफ है, किस जगह कौन सा मन्त्र कहना है। अगर वो बराबर आपको यह बता सके तो आप उस मन्त्र को कहें तो आपको मन्त्र सिद्धि हो सकती है। सहज-योग में आज ऐसे हजारों लोग हैं जिन्होंने मन्त्र को सिद्ध कर लिया है। इतने मन्त्र सिद्ध हैं उनके कि वो अगर अपनी जगह में भी बैठकर मन्त्र कह दें तो उससे जो काम करना है करा सकते हैं। मतलब है बुरा काम तो सहजयोग में कोई कर ही नहीं सकता लेकिन अच्छे कर सकते हैं। ऐसे ऐसे लोग पहुँच गये हैं सहजयोग में, दिल्ली में नहीं हैं, इतने दिल्ली में कोई लोग बहुत पहुँचे हैं, लेकिन इतने ज्यादा लोग नहीं हैं। बाकी ऐसे बहुत से लोग जिन्होंने मन्त्रों को एकदम सिद्ध कर लिया है और उस सिद्धता के लिये मन्त्र पर मेहनत करनी पड़ती है। बैठ कर मेहनत करनी पड़ती है, उस पर बोलना पड़ता है अपने चक्रों पर ध्यान करना पड़ता है और उसकी सिद्धता हासिल हो जाती है। अगर किसी ने गणेश का मन्त्र सिद्ध कर लिया है तो वो आदमी इतने कमाल कर सकता है कि कोई हद नहीं। लेकिन अभी तक सहजयोग में ऐसे बहुत थोड़े लोग हैं कि जो इस ओर ध्यान देते हैं। और जिन्होंने भी ध्यान दिया, ऐसे मैंने बहुत से लोग देखे हैं जिन्होंने मन्त्र को इतनी जल्दी सिद्ध कर लिया है कि मुझे आश्चर्य होता है। उनके एक ही मन्त्र से कितना बड़ा कार्य हो जाता है। इसलिये मैं आपसे कहती हूँ कि अपने विशुद्धि चक्र को आप स्वच्छ रखें। विशुद्धि चक्र जो है यह विराट है। कृष्ण विराट-स्वरूप हैं। अन्त में कृष्ण विराट हो जाते हैं। सारा जो evolution (उत्क्रान्ति) है ये सिर्फ विष्णु शक्ति से होता है तो विष्णु बनते बनते आखिर विराट हो जाते हैं। विराट का स्थान ये है, ये विराट का स्थान है। इसी से विशुद्धि चक्र को ठीक करने के लिये ये पेशानी आप किसी के सामने मत झुकाइये। ये विराट के सामने ही झुकनी चाहिये क्योंकि आप विराट के अंग प्रत्यंग हो

गये हैं। अब आप पार हो गये। अब खबरदार, अगर जो आपने अपनी पेशानी किसी के सामने झुकाई। अगर आपने किसी के सामने झुकाई है तो आप विराट को भूल गये। मौहम्मद साहब ने बहुत बड़ा मन्त्र विराट का कहा है "अल्लाह हो अकबर" और ये मन्त्र जो मोहम्मद साहब ने (वो साक्षात् दत्तात्रेय थे) और उन्होंने ये मन्त्र कहा है कि आप "अल्लाह हो अकबर" कहो। अकबर माने great, माने विराट। ये जो उंगली विशुद्धि की है, दोनों उंगली कान में डाल कर ऊपर पीछे की तरफ गरदन कर के "अल्लाह हो अकबर" कहें तो आपका विशुद्धि चक्र खुल जाता है। इसके अलावा और बहुत से आसन आदि हैं। इसके मामले में मैं आपको बता नहीं सकती आज, लेकिन अनेक तरीके से यह ठीक हो सकता है और उसको ठीक रखना चाहिये। सबसे बड़ी बात है कि आपकी जबान से कोई सी भी कड़वी बात किसी से कहनी नहीं चाहिये और किसी की भी चापलूसी करने की जरूरत नहीं है। और अगर कोई सहजयोग को नहीं मानता तो साफ कह देना चाहिये कि रहने दीजिये "यह आपके बस का नहीं, छोड़िये।" न ही किसी के सामने चापलूसी करने की जरूरत है, न ही किसी के सामने घिघयाने की जरूरत है और न ही किसी से कठिन बात करने की जरूरत है। मानते हैं तो ठीक है वरना छोड़ दीजिये बस काम खत्म। बीचों-बीच में रहना चाहिये।

विशुद्धि चक्र के अनेक दोष हैं। उसके अनेक तरीके हैं क्योंकि सोलह उसकी कुल कलाएं हैं और सोलह हजार इसकी शक्तियाँ हैं जो कृष्ण के साथ उनकी पत्नियाँ बनकर उनके समय में रही थीं। यदि कोई कृष्ण के ऊपर कहे, वो इस तरह के आदमी थे तो बड़ा आश्चर्य होता है क्योंकि वो योगेश्वरों के योगेश्वर थे। उनको समझने के लिये आपको बहुत कुछ अधिक सीखना पड़ेगा। वो स्वयं साक्षात् योगेश्वर थे। ये उनकी 16000 शक्तियाँ थीं जिनको उन्होंने जन्म दिया था इस संसार में और फिर उनको ही उन्होंने कैद करवाया और फिर उनसे विवाह किया क्योंकि उनके पास सहज योगी तो थे नहीं तो उन्होंने सोचा कि ठीक है मैं अपनी शक्तियों को ही साकार स्वरूप में संसार में भेजता हूँ और उन्होंने जो सबसे बड़ा कार्य किया है कि उन्होंने सहज-योग की कृषि करी। उन्होंने इसे पूरी तरह से बीज को फैलाया और ईसा मसीह ने बाद में आज्ञा चक्र में आकर कहा कि कुछ बीज इधर पड़ गये, कोई बीज उधर पड़ गये, कोई बीज इधर पड़ गया। जब ईसा मसीह अपने बाप की बात करते हैं तो वो दूसरा तीसरा कोई नहीं है, वो कृष्ण ही हैं। कृष्ण ही उनके पिता हैं। जब भी ईसा मसीह की उंगलियां देखिये तो ये दो उंगलियां हैं। यह उंगली विष्णु की है, यह उंगली कृष्ण की है। हमेशा उन्होंने अपने बाप की बात की इसके लिये आप अगर पढ़ते हों तो देवी-भागवत् पढ़ें। इसमें महा विष्णु का वर्णन है जो राधाजी का पुत्र बनाया हुआ था और बिल्कुल वही चीज ईसा मसीह हैं। उनके दो हिस्से थे। एक हिस्सा श्री गणेश और एक ईसा-मसीह, आगे चलकर के एकादश-रुद्र में यही जो बड़ी भारी शक्ति है वो ॐ की शक्ति है इसीलिये वो मरे नहीं उनका resurrection (पुनरुत्थान) हो गया। साक्षात् प्रणव हैं जो कि संसार में आया और इस संसार से उठकर चला गया। यह साक्षात् गणेश था जो इस संसार में आया और इसीलिए उसको कोई चीज मार नहीं सकी। यह एक ही अवतार ऐसा परमात्मा ने भेजा था जो साक्षात् 'प्रणव' मात्र था। इनका क्रॉस पर चढ़ाना, जो है वो इसलिये हुआ था कि आज्ञा चक्र को उनको खोलना था, आज्ञा चक्र को। जब मनुष्य ने अपनी बेवकूफी से उनको क्रॉस पर चढ़ा दिया तब मानो जैसे कि उन्होंने सबके लिये अपने को उस आज्ञा-चक्र से निकाल दिया और उनका जो सन्देश है वो क्रॉस नहीं है। उनका सन्देश जो है पुनरोत्थान है। उन्होंने उसमें से पुनरुत्थान करके दिखाया। उन्होंने मर करके जी कर दिखाया। वही सहज-योग है कि जिसमें आपका भी

जो conception है वो immaculate है यानि आप भी माँ के हृदय गर्भ में आप आते हैं और वहाँ से माँ आपको ब्रह्मरन्ध्र में पैदा करती है आप जो पहले हैं वो मर जाते हैं और एक नये हो जाते हैं। ईसा मसीह ने यह सबसे पहले, उन्होंने करके दिखाया था। वो सबसे बड़ा बेटा माँ का था और वो आपका सबसे बड़ा भाई है जिसने यह सबसे पहले इतना बड़ा काम करके दिखाया। और आज उसी बूते पर आप लोग पार हो रहे हैं। जो भी incarnations (अवतार) आते हैं वो अगवाई करते हैं। एक step forward जो होता है, वो अगवाई करते हैं और उन्होंने यह बड़ा भारी महान कार्य किया था। और आज्ञा चक्र पर जो आदमी पार हो गया है वो जानता है कि हमारा मन्त्र उस पर सहज-योग में Lord's prayer है। Lord's prayer से आज्ञा चक्र एकदम छूट जाता है। जोकि उसमें कहा है कि "जैसे कि हम अपने अपराधों की क्षमा करते हैं, अपराध जिन्होंने हमारे खिलाफ किये हैं उनकी क्षमा करते हैं; उसी प्रकार हे प्रभू! हमारे अपराधों को क्षमा करो।" यही मन्त्र आज्ञा चक्र का है, आपको आश्चर्य होगा। और बहुत बार मैं आपसे कहती हूँ कि "माफ कर दो, माफ कर दो, माफ कर दो" क्योंकि आपका आज्ञा चक्र पकड़ा है। अहंकार और प्रति-अहंकार दोनों के बीच इनका स्थान है जहाँ पर पिट्टूटरी (pitutary) और पीनीयल (pineal body) बॉडी भी दोनों को सम्भालती है, इनके बीचों-बीच एक बहुत सूक्ष्म स्थान आज्ञा का है और यह दोनों इस पर काम करते हैं। शुरूआत तो दोनों की विशुद्धि चक्र से होती है पर इनका चलन-वलन और सम्भालना और (steering) स्टीयरिंग जोहै वो आज्ञा चक्र से होता है जिस पर साक्षात् महा-गणेश और महाभैरव बैठे हुए हैं और जो सामने की तरफ यहाँ, ये जो आज्ञा चक्र के, ये जो हैं यहाँ पर ईसा-मसीह का स्थान है। ईसा-मसीह महा विष्णु हैं और उनके लिये कृष्ण ने कहा था कि मुझे जो-जो चीज संसार में अर्पण करेंगे उसमें से सोलहवां हिस्सा तुम्हारा रहेगा और तुम सारे संसार का आधार बन कर आओगे और मेरे से भी ऊपर तुम्हारा स्थान रहेगा। हालांकि श्री कृष्ण का स्थान यह है विराट का, लेकिन यहाँ पर बीच में आज्ञा चक्र में दोनों जगह विशुद्धि और विराट के बीचों-बीच में उन्होंने अपने बेटे को बैठाया है और राधाजी उनकी माँ थीं, वही मेरी थीं। राधाजी जो थीं वो ही संसार में मेरी (Mary) के रूप में आई थीं और वो ही इस बेटे को लाई। यह सारा खेल और नाटक इसलिये किया गया कि मनुष्य अपनी मूर्खता को समझ ले कि अहंकार में अपने ego में उन्होंने ईसा-मसीह जैसे आदमी को, जोकि साक्षात् ब्रह्मस्वरूप थे, उनको तक पहचाना नहीं। लेकिन अब ऐसा नहीं हो सकता।

ईसा-मसीह ने कहा है "कि मेरे खिलाफ चाहे आपने कुछ भी कहा हो उसकी मैं माफी करता हूँ और मेरे साथ आपने कोई भी ज्यादती की है उसके लिये मैं माफी देता हूँ लेकिन अगर Holy Ghost माने आदिशक्ति के खिलाफ अगर किसी ने जरा सा भी कदम उठाया तो उसको मैं देख लूंगा।" साफ-साफ शब्दों में कहा है। उसका punishment जो है वो बहुत गहरा होगा। साफ-साफ उन्होंने इन शब्दों में कह दिया है कि अगर आप बाइबिल (Bible) पढ़ें तो आप देख लें। इसका मतलब उन्होंने कह दिया कि Holy Ghost (आदिशक्ति) संसार में आने वाले हैं और Holy Ghost से ठण्डी हवा आयेगी, Cool breeze आयेगी; यह भी बाइबिल में लिखा है। इसलिये ईसाई लोग मुझे जरा (मतलब हिन्दुस्तान के नहीं लेकिन बाहर के) मुझे बहुत जल्दी मान जाते हैं क्योंकि यह पहचान है Holy Ghost की। यह आदि-शक्ति की पहचान है। और किसी से भी ऐसी ठंडी हवा नहीं आती है जैसी Holy Ghost से आती है, जैसे कि लिखा हुआ है।

पर सबसे तो आश्चर्य है वहाँ एक विलियम ब्लेक (William Blake) नाम का आदमी जोकि

बहुत बड़ा कवि सौ साल पहले हो चुका है, उसने यहाँ तक लिख दिया है कि हमारा आश्रम कहाँ रहेगा। Lambethvale (लेम्बैथवेल) में आश्रम रहेगा जहाँ ruins (खंडहरों) में foundations (नींव) पड़ेंगे, जो सही बात है। और जब पहले पहल जब मैं London गई थी, तो जब जहाँ Surrey hills (सरे-हिल) में मैं रहती थी, वह भी लिखा है कि first residence in the little surrey hills, और यहाँ तक लिखा है कि उनके जो प्यार के Vibrations (वाईब्रेशन) हैं जो स्नायु हैं वो ईश्वर की तरह हर जगह हर एक समय विद्यमान हैं। और इतनी बारीक चीज़ सहज-योग की लिखी है और सबसे बड़ी बात जो उन्होंने लिखी है वो यह कि सहज-योग में लोग prophets होएंगे यानि प्रेषित यानि पार हो जायेंगे। ये भगवान के लोग हैं (Men of God) जो पार हो जायेंगे और एक विशेष बात होगी कि ये लोग जो पार होंगे वो दूसरों को भी prophets बनाएंगे। इसका सारा वर्णन उन्होंने दे दिया है। इसी तरह से Bible में भी John के Revelations में सहज-योग के बारे में सब कुछ लिखा हुआ है। जो समझने वाले हैं वो उसे पार होने के बाद समझ सकते हैं। इसी तरह की भविष्यवाणियाँ हर एक जगह हुई हैं। जो समझदार लोग हैं वो सब कुछ समझते हैं लेकिन जो समझदार नहीं हैं उनके लिये काला अक्षर भैंस के सामने क्या होता है वैसी ही बात है। इसी तरह की चीज़ है कि आदमी को समझाने के लिये ही पार कराना पड़ता है।

जब तक आपके अन्दर प्रकाश नहीं आयेगा, आप भी इस बात को नहीं समझ सकते। इसलिये आप पहले पार हो जाइये। फिर आप समझेंगे और पूरी बात को आप जानेंगे। पार हुए बगैर कोई भी बात करना व्यर्थ जायेगा।

अच्छा, अब बहुत समय (time) हो गया है, अब आप पार हो जाइये।

एक सहयोगी का पत्र

प्रिय बन्धु !

हम लोग एक पवित्र प्रणाली (System) के अवयव हो चुके हैं। हमारा धर्म बिना किसी चाह के कार्यरत रहना है। जो कुछ भी हमें करना है माताजी के मार्ग दर्शन के अंतर्गत ही है। जो कुछ भी उनकी कृपा से प्राप्त होगा वही हमारे लिये श्रेष्ठ है। जो भी परमात्मा की इच्छा है हम उसी में ढल जायें यही हमारी चाह है। हम परमात्मा के स्वीकार के योग्य हों यही हमारी सार्थकता है। यह जागृति समस्त मानव जाति में हो। जो भूले भटके हैं वे शाम तक वापस आ जायें यही प्रार्थना प्रभु से हमारी है। हमें न धन चाहिये न नाम चाहिये। हमें परमात्मा स्वीकार कर लें बस यही चाहिये।

एक उपहार हृदय का है। माँ के चरण-कमलों में समर्पित करने के लिये। इस धृष्टता के लिये माताजी से क्षमा चाहता हूँ। क्योंकि जो कुछ भी है उन्हीं का दिया हुआ ही तो है। हम भी उन्हीं के हैं, आशा है कि इसे स्वीकार करेंगे।

आपका ही
सी. एल. पटेल

गुरु पूजा

आज की शुभ घड़ी में आप महानुभावों ने जो गुरु पूजा का आयोजन किया है कदाचित् यह आप की अपनी माँ की पूजा है। इस पूजा का आयोजन क्यों किया है ? प्रत्येक आस्तिक शिष्य को यह बात जान लेनी आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य भी है कि अपने गुरुजी का आदर, सत्कार, सम्मान एवं पूजा करें। परन्तु गुरु भी वास्तविक होना चाहिए ऐसा नहीं कि वो अपने शिष्यों को भ्रमित (exploit) करे तथा जो ईश्वर की ओर से प्रमाणित भी नहीं है। पूजा अर्चना के आयोजन का प्रवन्ध किया जाता है क्योंकि आप ईश्वरीय सत्ता के सिद्धान्तों (statute) में आस्था रखने के लिए प्रेरित किए गए हैं। आपको बताये गए हैं कि मानव प्राणी के क्या २ धर्म हैं। वास्तव में इनके लिए गुरु की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। आप तद्विषयक पुस्तक का अध्ययन करें तो आपको विदित हो जायेगा कि ये ईश्वरीय सिद्धान्त क्या हैं। परन्तु गुरु इस बात का निरीक्षण करता है कि आप उन का अभ्यास करें अर्थात् उन सैद्धान्तिक नियमों के आधीन अनुकूल आचरण भी करते हैं अथवा नहीं। उन सिद्धान्तों का अभ्यास करना होता है और अपने जीवन में (आत्मसात करना) उतारना पड़ता है, जो एक कठिनतम कार्य है। ईश्वरीय सिद्धान्तों का पालन, बिना गुरु के—जो शोध शक्ति है—कठिनतम कार्य है। क्योंकि मानवीय चेतना में और दिव्य चेतना में बड़ा अन्तर है। इस अन्तर के दूरीकरण की शक्ति गुरु में ही निहित है जो स्वयं सिद्ध है। पूर्णता प्राप्त है।

आज पूर्णिमा है अर्थात् पूर्णचन्द्र की रात्रि। गुरु भी पूर्ण विकसित व्यक्तित्व का होना चाहिए जो इन सिद्धान्तों के विषय में बातचीत कर सके तथा अपने शिष्यों को इस स्तर तक सुयोग्य बनाकर ऊपर उठाये कि वे इन सिद्धान्तों को घोटकर पी जायें—अर्थात् अपनी समझ-बूझ द्वारा ग्रहण कर आचरण करें। वह उस रिक्त स्थान की खाई पाटने के लिए प्रस्तुत है और इसकी पूर्ति हेतु गुरु भी अत्यधिक उत्क्रान्त (greatly evolved) एवं उच्चकोटि का आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होना परमावश्यक है। इसके लिए साधु सन्यासी अथवा बनवासी होना आवश्यक नहीं। वह एक साधारण सा गृहस्थी भी हो सकता है। वह एक राजा भी हो सकता है। जीवन की बाह्याडम्बर युक्त दिखावट कुछ भी अर्थ नहीं रखती अर्थात् व्यर्थ है। चाहे आपकी स्थिति (position) कैसी भी क्यों न हो। मैं कहती हूँ कि इस दुनियां में तथाकथित पोज़ीशन आपके गुरु बनने में कोई अन्तर नहीं डाल सकती। जब तक कि आप ईश्वर के सिद्धान्तों को आत्मसात नहीं कर लिया है।

मैं आपसे फिर भी कहती हूँ कि सिद्धान्तों के अनुरूप अपने को ढालिये। अब हमें यह अवलोकन करना चाहिए कि ये सिद्धान्त क्या २ हैं ? सर्वप्रथम आप किसी का भी बुरा नहीं करेंगे अर्थात् किसी को भी हानि नहीं पहुँचायेंगे। पहला उसूल भी यही है कि किसी को भी हानि न पहुँचाई जाये, पशु अवश्य हानि पहुँचाते हैं क्योंकि उनको इस बात का ज्ञान नहीं होता कि वे किसी को हानि पहुँचा रहे हैं। यदि आप एक सर्प के पास से जा रहे हैं तो वह आपको डस लेगा—यदि वहां बिच्छू हो तो वह आपके शरीर के भीतर डंक द्वारा विष पहुँचा देगा। मानव प्राणी को किसी को भी हानि नहीं पहुँचानी है। आप उनका शोधन (correct) कर सकते हैं, हानि नहीं कर सकते। परन्तु बुरा न करने के उसूल को लोग यहाँ तक उठा ले गए हैं कि उसकी मौलिक वास्तविकता ही विनष्टप्राय: हो गई है। यथा जब यह कहा गया किसी को भी हानि नहीं पहुँचाओ तो

(गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर परम गौरवशाली माता जी के सारगर्भित उपदेश का हिन्दी रूपान्तर)

लोगों ने कहना प्रारम्भ कर दिया कि अच्छा मच्छर और खटमलों को हानि नहीं पहुँचायेंगे और न उन्हें मारेंगे। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो इस धर्म के अनुयायी हैं जिसमें वे मच्छर खटमल आदि का पालन पोषण करते हैं। यह महामूर्खता है। किसी वस्तु को धर्मांधता तक ले जाना वास्तविकता नहीं हो सकती।

सर्वप्रथम हमें किसी को भी हानि नहीं पहुँचानी चाहिए, विशेषतया जो ईश्वर के पथ पर चल रहे हों अथवा आत्म-साक्षात्कारी (पार हुए) व्यक्ति हों। उनमें कुछ त्रुटियों का आभास हो सकता है, अर्थात्गलतियों का उनमें समावेश हो सकता है उनको सुधार की आवश्यकता पड़ सकती है। कोई भी अभी तक पूर्ण (perfect) नहीं है। सो आप किसी का भी बुरा न करें, सदा सहायता देने का प्रयास करें। दूसरे, कोई भी व्यक्ति जो वास्तविक जिज्ञासु प्रवृत्ति का है, गलत भी हो सकता है। वह मिथ्या गुरुओं के पास भी गया हो सकता है। उसने गलत काम भी किए हों—आप उससे सहानुभूति रखिये। क्योंकि कभी कभी आप भी स्वयं गलत रास्ते पर चले जाते रहे होंगे। उससे पूर्व भी आप धोखा खा चुके हों। सो आपको और अधिक सहानुभूति दर्शानी है। इसका कारण यह है कि आप इस प्रकार की त्रुटियां एक तरह से कर चुके हैं। यह अच्छा है। क्योंकि आपको सहानुभूति ऐसों के लिए और भी अधिक है। अतः आप को किसी प्रकार से भी मनुष्य मात्र को हानि नही पहुँचानी है। आप उनको शारीरिक हानि भी पहुँचाने का कारण नहीं बनेंगे। उनको हानि पहुँचाने के उद्देश्य से उन्हें मानसिक क्लेश भी न दें। सुधार लाने के लिए यह अति उत्तम है।

द्वितीय सिद्धान्त यह है कि आप अपने पैरों पर खड़े हों अर्थात् स्वावलम्बी बनें। यह भी जानें कि आपने सत्य के साथ एकाकार कर लिया है। आपने सत्य-साक्षी से सत्य के दर्शन किए हैं। आप यह भी जानते हैं कि सत्य क्या है। आप असत्य से समझौता नहीं कर सकते—निश्चित ही आप नहीं कर सकते। अतः आपको किसी को भी हानि पहुँचाने की आवश्यकता नहीं। आपको इसे केवल वाणी देनी है। आपको खड़े होकर यह कहना है कि हमने सत्य को देखा है और यह सत्य है। आपको सत्य से एकीकरण करना है जिससे लोग सत्य के प्रकाश को आपके अन्दर देखें और मंजूर करें। यह दूसरों को कहने योग्य नहीं है कि आप सत्य का अनुशीलन करें—और सत्य यह है। तथा यह वही है जिसको ईश्वर का कानून कहा गया है। वे कैसे संचालित होते हैं तथा चैतन्य लहरियों के द्वारा ही हम इस योग्य हुए हैं कि इस तथ्य को पहचान सकें कि यह सत्य क्या है। परन्तु इस सम्बन्ध में अपने में सुदृढ़ विश्वास लायें तथा इसके लिए सबसे पहले आप स्वयं का पूर्णतया निरीक्षण कर लें। नहीं तो आप को बुराई के हाथों खेलना पड़ सकता है। सहजयोग में प्रवेश करने की प्रारम्भिक अवस्था में यह घटना बहुत लोगों के साथ घटित होती है। कृपया सचेत रहें और दृढ़ निश्चय कर लें कि आप सत्य बोल रहे हैं और कुछ नहीं तथा पूर्णरूप से और प्रत्येक प्रकार से सत्य का अनुभव किया है। वे लोग जिन्होंने चैतन्य लहरियों का अनुभव प्राप्त नहीं किया है उन्हें सहजयोग के सम्बन्ध में वार्तालाप नहीं करना है। उनको चैतन्य लहरियों का अनुभव प्राप्त करना है और फिर इसमें निमग्न एवं पूर्णतया ओत-प्रोत होना है, मन में धारण करना है। फिर आप कहने के अधिकारी हैं कि हमने उसे अनुभव किया है, यह एक महत्वपूर्ण कार्य है। आधुनिक समय में सहजयोगियों को यही करना है। अर्थात् उच्च स्वर से कहना है कि हमने सत्य को पा लिया है। वह भाग अत्यंत निर्बल है। आप जिस प्रकार से भी चाहें, सत्य की घोषणा कर सकते हैं। आपको हर स्वास-ओ-श्राम से इस सम्बन्ध में चर्चा करनी है और उनको बताना है कि अब यह सत्य है कि आपने ईश्वर की सत्ता में प्रवेश पा लिया है। ईश्वर की कृपा का आशीर्वाद आप को प्राप्त है।

आप पार व्यक्ति हैं अर्थात् आपने आत्म-साक्षात्कार कर लिया है। आपने उस सर्वव्यापी दिव्य-शक्ति का अनुभव प्राप्त कर लिया है। आप दूसरे लोगों को भी आत्म-साक्षात्कार करा सकते हैं। यह तथ्य आपने अन्य सब लोगों को जताना है कि सत्य को ग्रहण करने से आप सत्य में कुछ और योगदान नहीं कर रहे हैं बल्कि अपने स्वयं की पूजा कर रहे हैं। सत्य का पूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिए साहस की आवश्यकता है। कभी २ लोग आपका उपहास भी कर सकते हैं। आपकी खिल्ली भी उड़ा सकते हैं। भला बुरा कह सकते है। आपको इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये क्योंकि आपका सम्बन्ध ईश्वरीय सिद्धान्त से है, ईश्वरीय दिव्य कृपा से स्थापित है। जब आपका यह सम्पर्क है तो आपको अन्य लोगों की चिन्ता नहीं करनी चाहिये कि वे आपके विषय में क्या कहते हैं तथा उनकी आपके बारे में क्या धारणा है। आपको खड़ा होना है, स्वयं को सत्य के साथ पूजना है (adorn)। अन्य लोगों से बातचीत करनी है। आपकी इस प्रकार की साधिकार वार्ता से लोग यह जान जायेंगे कि आपने इसे खोज लिया है। एक पार हुये व्यक्ति में तथा बिना पार हुए व्यक्ति में मूल अन्तर यह है कि वह ईश्वर से संयोग एवं वियोग की वार्ता नहीं करता है। वह कहता है कि अब मैंने इसे पा लिया है। वह यह है। जैसे क्राइस्ट ने कहा था कि मैं ही प्रकाश हूँ और मैं ही मार्ग हूँ। क्या अन्य कोई ऐसी गर्वोक्ति कर सकता है। आपको शीघ्र ही तथ्य का ज्ञान हो जायेगा कि यह सत्य नहीं है। दृढ़ विश्वासपूर्ण समझ बूझ जो आपके हृदय से निकली है लोग जान जायेंगे कि वास्तविक सत्य क्या है। फिर प्रत्येक प्रकार के असत्य का परित्याग कर देना है। कोई चिन्ता की बात नहीं यदि किसी को बुरा लगे। आप जो कुछ कह रहे हैं उनकी रक्षा के लिये है हानि पहुँचाने के लिये नहीं है। यह बात सही ढंग से कही जानी चाहिये न कि आडम्बरयुक्त प्रणाली से। बड़ी ही विनम्र कोमल वाणी से उनको समझाना है कि यह उपयुक्त नहीं है, अर्थात् गलत है। आपको उस समय की प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कि आप विश्वास के साथ न कह सकें। उनसे कहिये कि यह गलत है। आप अनभिज्ञ हैं। इस प्रकार से आप मास्टरी के उसूल को प्रकट करने जा रहे हैं। आप इसे गुरु तत्व भी कह सकते हैं। आप को सत्य का अनुशीलन करना है। सबसे प्राथमिक एवं अनिवार्य वस्तु यह है कि आपको सत्य को जानना चाहिये, साक्षी बनिये और इस (व्यक्तव्य) की उच्चस्वर से घोषणा करनी चाहिये।

तीसरी बात जो सहज योगियों को गुरु के प्रति करनी है वैराग्य (Detachment) का विकास। क्रम से ही आप इसका विकास कर सकते हैं। आप पायेंगे कि जब तक आप वैराग्य का विकास नहीं करेंगे तब तक आप चैतन्य लहरियों का पूर्ण आनन्द प्राप्त न कर सकेंगे। हर प्रकार का वैराग्य विकसित करना है। इसका अर्थ है आप की प्राथमिकताओं में परिवर्तन। एक बार जब आपका ध्यान आत्मा में केन्द्रित होकर स्थिर हो जायेगा तो वस्तुओं के प्रति मोह आपकी दृष्टि में महत्वहीन है। अपने आप घटने लगेगी। उदाहरणार्थ आपके पिता हैं, माता हैं, तथा बहिन हैं। भारतवर्ष में यह एक महती समस्या है। यहाँ तो आप अत्यधिक लगाव नहीं रखते—परन्तु भारत में लोगों का रुझान अपने बच्चों के प्रति आवश्यकता से भी अधिक है। वे समझते हैं कि बस हमारे ही बच्चे हैं और तो सब अनाथ हैं। केवल आपके पुत्र और पुत्रियाँ ही असली बच्चे हैं—मेरी पुत्री; मुझे उस के लिये कुछ करना है, मेरा पुत्र, मेरी माता, मेरे पिता। वहाँ दो प्रकार के लगाव हैं प्रथम मोहपाश द्वारा बंधन कि मुझे उनके लिये यह करना है, मेरी इच्छा उनके लिये वह करने की है, मैं चाहता हूँ कि उनको कुछ सम्पत्ति कर दूँ तथा उनकी भावी सुख-सुविधा हेतु जीवन बीमा की व्यवस्था भी कर दूँ आदि।

दूसरी तरह का मोह जो भिन्न प्रकार का हो सकता है, जैसा कि यहाँ पर है। आप अपने पिता से घृणा करते हैं। आप अपनी माता से भी घृणा करते हैं। आप हरेक से घृणा करते हैं। दोनों वस्तुएं एक समान हैं। अतः वैराग्य का विकास होना चाहिये। वैराग्य अथवा त्याग वह है कि आप ही अपने पिता हैं आपही अपनी माँ हैं आपही सब कुछ हैं। केवल आपकी आत्मा ही आपके लिए सब कुछ है आपको अपनी आत्मा में ही मगन रहने से, उनसे वैराग्य होगा तभी आप उनका वास्तविक सुधार कर सकते हैं, उनकी असली भलाई कर सकते हैं। क्योंकि अलगाव से ही आप उनके सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी कर सकते हैं कि क्या करना है। उदाहरणार्थ लोगों का मोह किसी चीज के साथ होता है। मानव प्राणी, सदैव किसी न किसी वस्तु के प्रति विमोहित (crazy) होता रहता है। मेरा भाव है कि यह कुछ भी हो सकता है। आपको यह बात भली भांति समझनी आवश्यक है कि केवल एक ही क्रेज होनी चाहिये। वह यह कि स्थायित्व, अपनी आत्मा में पूर्ण स्थायित्वता। अन्य सभी क्रेज विलुप्त हो जायेंगे क्योंकि यह सर्वोच्च आनन्द प्रदायिनी वस्तु है। यह सर्वोत्कृष्ट पोषक वस्तु है। यह अत्यधिक मनोरम सुन्दर वस्तु है।

शेष सभी वस्तुयें विलुप्त हो जाती हैं। केवल उसी के साथ आनन्द मग्न होइए जो संसार के सब रंजनों का उद्गम स्रोत है। आपका अपनी आत्मा से सम्बन्ध स्थापित होते ही वैराग्य अपना कार्य प्रारम्भ कर देता है। अर्थात् अपनी आत्मा से लगाव होते ही, अलगाव अपना कार्य आरम्भ कर देता है। कभी कभी वैराग्य को दूसरों के साथ रूक्ष व्यवहार का लायसेंस भी मान लिया जाता है। यह घिनौना है, निरर्थक है। प्रत्येक सुन्दर वस्तु को मलिन करना मानव का गुण-स्वभाव है। वास्तव में एक व्यक्ति जो विरक्त है सर्वोत्कृष्ट एवं सुन्दर व्यक्ति है। वह अत्यधिक मोहक व्यक्ति है। पुष्पों की ओर निहारिये वे विरक्त हैं। वे कल समाप्त होने जा रहे हैं परन्तु प्रत्येक क्षण जिसमें वे जीवित हैं अपना सौरभ फैला कर आपको आनन्दित करते रहते हैं। वृक्षों को किसी से भी लगाव नहीं होता, वे कल विनष्ट हो जायेंगे, कोई बात नहीं। जब कोई भी प्राणी उनके निकट आता है,वह उन्हें सुखद छाया तथा मधुर फल प्रदान करते हैं। मोह का अर्थ है प्रेम की मृत्यु—प्रेम की पूर्ण मृत्यु मोह ही है। उदाहरणार्थ एक वृक्ष में sap ऊपर उठती है, प्रत्येक आवश्यकीय मार्ग में जाती है, पुष्पों और फलों में होती हुई वापस लौटकर पृथ्वी माता के गर्भ में समा जाती है। इसका लगाव किसी से भी नहीं होता। कल्पना कीजिये कि sap की किसी एक फल पर आसक्ति हो जाएगी तो क्या होगा? फल सूख जायेगा पेड़ विनष्ट हो जायेगा। अनासक्ति (Detachment) आप के प्रेम की गति आप को देती है-आपके प्रेम का संचालन (circulation) होता है।

अब वस्तुओं के विषय में। वस्तुओं का कोई मूल्य नहीं जब तक कि उनके पार्श्व में भावनायें सन्निहित न हों—मिसाल के तौर पर साड़ी जो मैं आज पहने हुए हूं, गुरु पूर्णिमा के गुरु दिवस के उपलक्ष में मोल ली गई परन्तु उनके पास कोई साड़ी उपलब्ध नहीं थी। दूसरे ही दिन उन्हें पूजा-अर्चना हेतु साड़ी की आवश्यकता थी। तब मैंने कहा कि यदि आपका आग्रह है तो मैं ग्रहण करूंगी, मैंने इसको पहना केवल यह कहने के लिये कि यह गुरु दिवस को श्रद्धा भक्ति एवं प्रेम से मोल ली गई। माताजी कुछ हल्की शेड की पहनना पसन्द करेंगी-धवल-सिल्क का विशुद्ध रंग-पूर्ण अनासक्ति। परन्तु धवल में सब रंग मिले रहते हैं अतः यह सफेद हो जाती है-यह है एक ऐसा संतुलन (Balance) और एकता (unity) इसमें यह भावना निहित है कि यह बर्फ से उज्ज्वल से उज्ज्वलतर बर्फ की नाईं होनी चाहिये। अनासक्ति शुद्धता है। सरल अबोध मासूम है। मासूमियत एक ऐसा प्रकाश है, ज्योति है जो वास्तव में आपको मैले कूड़े के प्रति अन्धा बना देगी। आपको यह भी ज्ञान नहीं होगा कि एक व्यक्ति आपके पास बुरी नीयत

(intention) से आ रहा है। एक व्यक्ति आपके पास चोरी करने के लिये आता है। आप कहेंगे श्रीमानजी पधारिये। आप क्या चाहते हैं अथवा क्या अभीष्ट है। आप उसका चाय आदि से सत्कार करते हैं। तब वह कहता है कि मैं तो आप को लूटने आया हूँ। बहुत अच्छा, यदि आपकी इच्छा ऐसी ही है तो लूटिये। सो यह सम्भव है कि वह आपको न लूटे। यह वह मासूमियत है जिस को व्यक्ति केवल अनासक्ति के माध्यम से ही विकसित कर सकता है। अनासक्ति ध्यान की है। आप अपने ध्यान को किसी वस्तु में उलझने की आज्ञा न दीजिये। किसी प्रकार के रीति रिवाजों में भी नहीं। यथा, हमने माताजी के चरण नहीं पखारे हैं। बहुत अच्छा यह कोई बड़ी बात नहीं। आप मुझे प्रेम करते हैं, बहुत बेहतर। यदि कोई त्रुटि हो जाये, तो भी कोई बात नहीं, यदि आप इसे सांसारिक दृष्टि से देखते हैं तो यह प्रेम है। यह एक अग्रगणी सोपान है। यह एक बढ़ता हुआ कदम है। जैसे कोई बहुत वेग से दौड़ा और मेरे पास पहुँचने से पूर्व ही गिर गया और कहता है कि माताजी मुझे खेद है कि मैं आपतक पहुँचने से पूर्व ही गिर गया था। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था। परन्तु माताजी दृष्टिपात कीजिये मैं हाथ जोड़े आपके आगे पड़ा हूँ। यह एक मुकम्मल प्रोपर्टी है- अनासक्ति।

सो आपको गुरुपद प्राप्त करने के लिये अनासक्ति का विकास करना है। अनासक्ति अथवा वैराग्य के माने सन्यास अथवा अन्य ऐसी ही वस्तु नहीं है। कभी 2 किसी 2 को दुनियां को जतलाने के लिये ऐसे वस्त्र भी धारण करने पड़ते हैं क्योंकि आपको अल्प समय में ही कार्य सम्पादन करना है। फिर आपको क्राइस्ट जैसा उत्कट व्यवहार करना पड़ेगा। अथवा आप आदिशंकराचार्य को भी ले सकते हैं। इन सब प्रभृतियों का जीवन अल्प ही था, और इस अल्पकाल जीवन में ही उन्हें महान जटिल कार्य सम्पन्न करने पड़े थे। उन्हें वास्तव में समस्याओं से बचाव के लिये फौजी यूनिफार्म (सैनिक वस्त्र) धारण करने पड़े थे दूसरों पर रौब डालने के लिये नहीं। आजकल लोग दूसरों को impress करने के लिये ही ऐसे वस्त्र धारण करते हैं कि लोग उन्हें वैरागी (अनासक्त) समझें परन्तु काम करते हैं इसके विपरीत-अतः हमें समझना चाहिये कि प्रथम कार्य किसी को भी हानि नहीं पहुँचानी है। अहिंसा, किसी को भी मारना नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं है कि आप मांस-मछली आदि भक्षण न करें। यह एक व्यर्थ की बकवास है। बहुधा आप को भोजन के लिये ललचाना नहीं है अर्थात आप भोजन पदार्थों के पीछे ललचाई दृष्टि से भागिये नहीं—इसके बारे में कोई संशय नहीं है। आप किसी को जान से मत मारिये का अर्थ है कि आप मनुष्यमात्र को नहीं मारेंगे। "तू नहीं मारेगा" सो प्रथम वस्तु है किसी को भी हानि नहीं पहुँचाना।

दूसरी है—(यह तथ्य) जानना कि आपने सत्य को खोज लिया है, पा लिया है और सत्य का प्रमाण भी दो।

तीसरी है अनासक्ति, अलगाव, वैराग्य। जिसके सम्बन्ध में मैंने अभी बताया है—अर्थात् किसी भी व्यक्ति में आसक्ति न रखना क्योंकि वह आपका कुटुम्बी है अथवा सगा सम्बन्धी, या अन्य कोई। संसारिक भावना को पनपाना है—विकास करना है। आपको किसी से भी घृणा नहीं करनी है। यह एक निम्नकोटि की आसक्ति अथवा मोह है। "मैं घृणा करता हूँ" यह शब्द सहजयोगियों की जिह्वा पर नहीं आना चाहिये। यह दण्डक नाम से विख्यात है, तथा सिद्धान्त है। आप किसी से भी घृणा नहीं कर सकते। राक्षसों से भी नहीं। उनसे घृणा न करना बेहतर है। उन्हें भी अवसर दो।

चतुर्थ ईश्वरीय सिद्धान्त है नैतिक जीवन-यापन। ये सिद्धान्त सब गुरुजनों द्वारा प्रदान किये गये हैं। सुकरात से आगे मोजेज, अब्राहम,

दत्तात्रेय, जनक तदनन्तर नानक, मोहम्मद साहिब, तथा सौ वर्षों के लगभग साईं नाथ इन सबने एक स्वर से यही कहा कि नैतिकता का जीवन व्यतीत करो। इनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि आप विवाह न करें। अथवा आप अपनी पत्नी से वार्तालाप न करें अथवा आप अपनी धर्मपत्नी से किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न रक्खें। यह सब निरर्थक बातें हैं। नैतिक जीवन व्यतीत करें। जब आप युवा हैं और विवाहित नहीं है तो आपको पृथ्वी पर दृष्टि रखनी चाहिये। धरती माता आपको सरलता, भोलापन, मासूमियत प्रदान करेगी। बहुत से संशय भ्रम समुदाय और समस्यायें विशेषतया पाश्चात्य जीवन में उत्पन्न हो गई हैं क्योंकि उन्होंने नैतिकता को समुद्र में फेंक दिया है। नैतिकता को समाज का मूल आधार मानकर स्वीकार करना उनके लिये दुष्कर कार्य है। यह तो पूरा उलट पलट हो गया है। परन्तु आपको यह करना है। आपको सारे चक्र (पहिये) को वापस मोड़ना है। सोसाइटी के प्रारम्भ में इन शुद्ध सम्बन्धों, नाते रिश्ते, को स्थापित करने के लिये बहुत सारे कार्य किये गये। यहां कानून हैं जो कार्य करते हैं। जैसे रसायनिक कानून, भौतिक कानून, रसायनशास्त्र एवं भौतिकशास्त्र में मौजूद है। इसी प्रकार मानव सम्बन्धी भी कुछ कानून हैं जिनको समझना चाहिये। पारस्परिक सम्बन्ध जो एक दूसरे के मध्य वर्तमान है उनके सम्बन्ध को महत्ता एवं उन सम्बन्धों की शुद्धता को समझना चाहिये। तभी आप बहुल सुख सम्पन्न विवाहित जीवन व्यतीत कर सकते हैं जो आधार है। "तुम मिलावटी व्यभिचार नहीं कर सकोगे।" क्राइस्ट का प्रवचन है। कदाचित वह जानते थे कि आधुनिक लोग अपने मस्तिष्क का इस प्रकार दुरुपयोग करेंगे। प्रभु ईसा ने कहा कि "तू मिलावटी एवं व्याभिचारिक चक्षु नहीं रखेगा, "मेरे विचार से क्या ही अच्छा दृश्य (vision) उन दिनों का उनके विचारों में था। जब मैं भारत में थी तो मेरी समझ में यह सब कुछ नहीं आया। यहाँ पर आने के पश्चात ही मैं देखती हूँ कि इसके क्या क्या अर्थ हो सकते हैं। यह चक्षु पकड़ (possession) पर एक पकड़ है। यह आनन्द रहित, अभद्र व्यवहार है। ध्यान पूर्णतया टूट जाता है। आपके नेत्र स्थिर (steady) रहने चाहिये। यदि आप किसी व्यक्ति की ओर स्थिरता (steadily) से देखेंगे तो वह मान जायेगा कि आपके अन्दर सहज-योग विद्यमान है। प्रेमपूर्वक, सादर, गौरवयुक्त सौजन्यता से। लोगों को घूरकर देखना नहीं है जो इन 'पकड़' के हाथों से खेल रहे हैं। सारा समाज ही 'पकड़' से जकड़ा हुआ है। सब राक्षसीवृत्तियों को खुला (मुक्त) रख छोड़ा गया है। मेरे विचार से जिस प्रकार से लोग "पकड़" की जकड़ में आते हैं, इन वस्तुओं के माध्यम से नहीं देख सकते। फिर भी वे ईसाई कहे जाते हैं। ध्यान (attention) की निगहबानी करनी है। यह एक महत्वपूर्ण वस्तु है। ध्यान वही है जो कि प्रकाशमय होने जा रहा है।

सो हमें जानना है कि नैतिकता क्या है। लोगों को हंसने दो और कहने दो कि ये गुडी गुडीज हैं, आदि आदि। हमें गर्व है और धार्मिक व्यक्ति होने के नाते शर्मिन्दा भी नहीं हैं। यह धार्मिकता का प्रधान अंग है। जो इसका अनुशीलन नहीं करते वे अतिशीघ्र ही अपनी चैतन्य लहरियों से हाथ धो बैठेंगे।

गुरु के प्रति। गुरु को वस्तु संग्रह (लोभ वश) नहीं करना चाहिये। उसके अधिकार में अधिक सम्पत्ति नहीं होनी चाहिये। यदि उसके पास धन दौलत है तो वह उसकी आवश्यकता के अनुरूप ही पर्याप्त होना चाहिये। गुरुको अपनी फालतू धन सम्पति का वितरण कर देना चाहिये। गुरु को डाक टिकट एकत्र करने का व्यसन तथा अन्य कोई ऐसा ही व्यसन नहीं पालना चाहिये। जो वस्तु सुन्दर है, मनोहारी है, उपयोगी है और नयनाभिराम है, एकत्र करना चाहिये। उसको ऐसी वस्तुएँ रखनी चाहिये जो उस के जीवन के सांकेतिक प्रतीक हों। बहुत symbolic जो यह सुझाव दें कि यह धार्मिक व्यक्ति है। जो अधार्मिक जीवन की

अधार्मिकता के प्रतीक हों उन वस्तुओं को उसे अपने पास नहीं रखनी चाहिये। प्रत्येक वस्तु जो वह रखता है, पहनता है या दिखाता है वह उसकी धार्मिकता के प्रतिनिधि होने चाहियें। यहां की हालत का तो मुझे पता नहीं परन्तु भारत में जब हम युवा थे तो हमें सब प्रकार का संगीत सुनने की छूट नहीं थी। आज्ञा नहीं थी। हमें सर्वप्रकार की गंदगी भरी वस्तुओं के देखने की मनाही थी। गंदे वृतचित्र भी नहीं देख सकते थे। कोई भी ऐसी अशुद्ध वस्तु जो बुरी चैतन्य लहरियाँ दे अपने पास नहीं रखनी चाहिये। जो कुछ भी आप रखते है, आपको विचार करना चाहिये कि यह किसको दिया जा सकता है। इसका मतलब है कि आपकी सम्पत्ति उदारता प्रदर्शित करने के लिये है। सहजयोगी को समुद्र की भांति उदार होना चाहिये। एक सहजयोगी लोभी लालची भी हो सकता है, मैं यह सोच भी नहीं सकती। यह तो अंधेरे और उजाले के समान है। कंजूसी, लोभी लालची का सहजयोग में कोई स्थान नहीं है।

कोई भी व्यक्ति जिसका मस्तिष्क इसी उधेड़-बुन में लगा रहता हो कि कितने धन की बचत कर सकता हूँ। कितना श्रम बचा सकता हूँ। बहुत श्रम बचत की युक्तियां है। बहुत सी धनबचत की युक्तियां भी उपलब्ध है। धोखा धड़ी की युक्तियां एवं अल्प धनराशि से विपुल धन अर्जित करने की युक्तियां भी हैं। परन्तु ये सब यहां वहां की वस्तुयें सहजयोग के विपरीत हैं। ये आपको निम्न स्तर पर ले जाने वाली हैं। आप अपनी उदारता के आनन्द में निमग्न रहे। उसकी मस्ती लें। उदारता के सम्बन्ध में मैंने आप लोगों को कितनी बार कहा है। एक समय की मुझे याद है कि मैंने एक साड़ी देने की इच्छा प्रकट की जो विदेशी थी। जैसाकि आप देखेंगे भारत में इस प्रकार की विदेशी साड़ियों की अत्यधिक मांग है। विशेषतया नाइलोन किस्म की साड़ियां ही क्यों अत्यधिक पसन्द की जाती है यह बात मेरी समझ में आती ही नहीं। एक भद्र महिला ने कहा कि मेरे पास कोई विदेशी साड़ी नही है। अतः मैं एक आयातित साड़ी रखना पसन्द करूंगी। मेरे पास केवल एक ही ऐसो साड़ी बाकी बची थी, क्योंकि मैं देने में उदार हूँ। सो मैंने अपनी भतीजी (ससुराल की ओर से) से कहा कि मैं इस साड़ी को उनको देना चाहती हूँ। होली के दिन हम बड़ों को कुछ न कुछ उपहार अवश्य देते हैं सो मैं यह साड़ी उनको दे दूंगी। उसने कहा कि आपके पास तो केवल एक ही साड़ी बची है तो आप इसको भी उन्हें क्यों दे देगीं। आपके पास जो कुछ थीं वह तो सब दे डाली। मैंने कहा कि मेरा मन देने के पक्ष में है सो मैं उसे दे दूंगी। हम सब रसोई घर में बैठे ये बातें कर रहे थे, मैंने कहा कि आप मुझे क्यों कह रही हैं, इस विषय में मुझे आपका सुझाव मान्य नहीं। उसी समय घंटी बजी और एक सज्जन ने प्रवेश किया। वह अफ्रीका से तीन साड़ियाँ मेरे लिये लाए थे और उनमें से एक तो बिल्कुल वैसी ही थी जैसी मेरे पास थी। मैंने देने की ठान ली थी। पहिले कभी एक महिला को जो अफ्रीका जा रही थी मैंने कुछ रेशमी साड़ियां दी थी। उसने सोचा कि मां को कुछ साड़ियां भेज दी जायें। अतः उसने इस सज्जन के हाथ साड़ियां भेज दी। आप केन्द्र में खड़े हैं। एक द्वार से यह आता है तथा दूसरे द्वार से जाता है। यह आवागमन की हरकत कितनी सुलभ एवं मनोहारी दिखाई देती है। यह अत्यन्त रोचक है।

इसके अतिरिक्त, आप किस प्रकार से देते हैं (दान करते हैं) इसकी भावात्मकता इतनी सुन्दर है कि आप कल्पना नहीं कर सकते। मेरी अकस्मात ही एक भद्र महिला से, जो विगत तीस वर्ष से लंदन में निवास कर रही थी, भेंट हो गई। उसने कहा कि क्या ही संयोग बना है। मैंने कहा क्यों। उसने कहा कि मैं वही मोतियों की माला पहने हूँ जो आपने मुझे मेरे विवाह में उपहार स्वरूप दी थी और आज भी मेरे विवाह का दिन है तथा आज ही मिलन संयोग हुआ। समस्त वस्तुएं, समस्त

ड्रामा इस मिलन से परिवर्तित हो गया। यह इस प्रकार है कि आप तुच्छ सा उपहार किसी को भेंट करते हैं। यह दान की सर्वोत्कृष्ट कला है जो सहजयोगियों को सीखनी है। दुनियादारी किस्म की वस्तुओं का त्याग कर दें यथा आप यदि किसी के जन्म दिन पर जाते हैं तो इस अवसर पर आप एक कार्ड भेजिये "आपको बहुत बहुत धन्यवाद"। इसको आप गम्भीर, गहन एवं महत्वपूर्ण बनायें। हमें देखने दें कि आप अपने प्रेम के symbol का विकास किस प्रकार करते हैं। जब आपके पास वाइब्रेशन्स की वस्तुएं हैं और आप इसे एक सहजयोगी को देंगे, वह जान जायेगा कि यह क्या है। उदारता में न्यूनता कभी न लाएं विशेषतया परस्पर सहजयोगियों में। क्रमानुसार, आपको आश्चर्य होगा कि छोटी वस्तुओं से जीवन यथा वायब्रेशन्स उन वस्तुओं के माध्यम से बहती हैं और लोगों के लिये काम-करती हैं।

एक सहजयोगी को वह वस्तुयें जो उनके चरित्र में स्वाभाविक हों, उपयोग में लायें। यह एक महत्वपूर्ण विषय है। कृत्रिमता का परित्याग कर प्रकृतिस्थ होइए। मेरा कहने का आशय यह नहीं है कि आप जड़ें खोदकर खायें अथवा कच्ची मछली खायें, मेरा यह आशय नहीं है। सदैव किसी वस्तु की गहनता एवं गम्भीरता में नहीं जाना चाहिये। अधिक स्वाभाविक एवं प्राकृतिक जीवनयापन का प्रयास करना चाहिये। प्राकृतिक इस अर्थ में कि लोग जानें कि आपके बारे में कोई अवास्तविकता (vanity) अथवा बनावट नहीं है। कुछ लोग दूसरे ही चक्कर में पड़े हो सकते हैं। वे आवारा छबीलों की तरह वस्त्र पहनेंगे जिससे लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हो। मेरे कहने का तात्पर्य है कि दो मार्ग भी हो सकते हैं। फिर मुझे पता लगा कि कुछ लोग अपने बालों को रंगते हैं आदि। सो आपको स्वाभाविक (प्राकृतिक) पुरुष होना है—अपने व्यवहार में अत्यधिक स्वाभाविकता। जो लोग अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग नहीं करते उनमें से कुछ को यह बात निरर्थक लगेगी। सहजयोग में बुद्धिमता बहुत महत्वपूर्ण है। आपको सदैव सुदृढ़ रहना है। स्वाभाविकता का तात्पर्य है कि आप स्वाभाविक वस्त्र धारण करें जो आपको मनभावन (suitable) हों। जैसे इस जलवायु में रामचन्द्रजी जैसे वस्त्र पहनना पसन्द करते थे ऐसे वस्त्र पहनने का कोई उपयोग नहीं है। वह शिरोभाग पर कोई वस्त्र धारण नहीं करेगा क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। आपको सदैव स्वदेशी एवं राष्ट्रीय वस्त्र ही धारण करने चाहिये। अवसर के अनुकूल जो कुछ भी आप विचार करते हैं वह गरिमायुक्त और अच्छा है। यह आप के व्यक्तित्व के गौरव के निखार को प्रदर्शित करता है। जो आपको अनुकूल हो पहनें। ऐसे लोगों जैसे नहीं जो विविध विचित्र रंगों के वस्त्र, बड़े बड़े सूट, भयंकर दृश्यमान वस्त्र जिससे वे हंसोड़िये बन जायें। विदूषकपन की वस्तुओं की आवश्यकता नहीं। कसीदाकारी (बेलबूटे) के वस्त्रों की भी आवश्यकता नहीं। साधारण, सुन्दर वस्त्र आपको, धारण करने चाहिये जिससे आपकी गरिमा में बढ़ोत्तरी हो। वास्तव में पूर्वदिशा निवासियों का यह विश्वास है कि ईश्वर ने उन्हें सुन्दर शरीर प्रदान किया है। उसका सामान्य मानव निर्मित सौन्दर्य प्रसाधन द्वारा श्रृङ्गार करना है। इसका आदर सत्कार तथा अर्चनपूजन कर शोभा बढ़ाने में योगदान दें। उदाहरणार्थ भारत में स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं जो उनके मनोभावों (mood) को प्रकट करती हैं तथा शारीरिक सजावट एवं अर्चना को प्रकट करता है क्योंकि आप अपने शरीर का सम्मान करते हैं। वस्त्र ऐसे होने चाहिये कि उनकी उपयोगिता हो और आपको वांछनीय सम्मान प्रदान करें। सहजयोग में एक समान वस्त्र (uniform) पहनने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं। मुझे यह किंचिन्मात्र कभी पसन्द

नहीं। विभिन्नता जैसी कि प्रकृति में है होनी चाहिये। प्रत्येक पुरुष बिल्कुल अलग थलग दिखाई देना चाहिये। अर्चना पूजनार्थ समान वस्त्र पहने जा सकते हैं इसकी कोई परवाह नहीं जहाँ कि विविधता पर आपका ध्यान केन्द्रित न हो परन्तु बाहर आप स्वाभाविक लगें। आप सब लोग सद्गृहस्थ हैं आप के बारे में कोई घोषणा करने वाला नहीं है। आप लोगों के लिये मैं आपको यह सीख नहीं दूँगी कि आप लाल बिन्दी लगायें जबकि आप सड़क पर चलें। आपको स्वाभाविक व्यक्ति होना चाहिये; ऐसे नहीं कि लोग उंगली उठायें। आपको कुरुचिपूर्ण एवं कौतूहलवर्धक वस्त्र धारण नहीं करने चाहियें बल्कि स्वाभाविकता से जैसे और लोग पहनते हैं। सहजयोग में सामान्य स्वाभाविक रहना अधिक महत्वपूर्ण है।

हमें यह भी जानना है कि सहजयोगियों को सर्व प्रकार के भेदभाव और पहचान चिन्ह (discrimination and identification) जातीयता एवं विभिन्न धर्म के अनुयायी जिसमें कि वे पैदा हुये, के स्तर से ऊपर उठना है। एक ईसाई होने के नाते आप चर्च की सम्पत्ति नहीं हैं। आप चर्च में पैदा नहीं हुए। इसके लिये भगवान को धन्यवाद दें। नहीं तो आपको भारी संख्या में आत्मायें जो वहाँ पर विद्यमान हैं शीघ्रातिशीघ्र जकड़ लेतीं। परन्तु ये चिन्ह, पहचान (identification) आदि भेदनीति रेंगती ही रहेंगी। कुछ नवीनता ग्रहण हेतु आपको पुनर्जन्म लेना होगा और आपका पुनर्जन्म हो गया। अब आप धर्मातीत हो गये हैं इसका अर्थ है कि आपको धर्म के किसी विभेद अथवा मत मतान्तर का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं। आप सब प्रकार के धर्मों के लिये मुक्त हैं। आपको सब धर्मों के तत्वों को ग्रहण करना है। आपको किसी धर्म को छोड़ना नहीं है अथवा हमें कभी भी किसी धर्मावतार; का अपमान नहीं करना उसके प्रति उद्दण्डता का व्यवहार नहीं करना। यह एक पाप है। यह सहजयोग में महापाप है। आप जानते हैं कि वे क्या हैं। अपने सम्बंध में किसी प्रकार की जातीयता की भेदनीति नहीं होनी चाहिये। आप चीनी अथवा अन्य किसी वर्ग से सम्बन्धित हो सकते हैं, आप कुछ भी हो सकते हैं। जब तक कि हम मानव प्राणी हैं, हम सब एक ही प्रकार से हंसते और मुस्कराते हैं जैसे अन्य लोग। यह हमारे मन में रूढ़िवादिता है कि हम समाज में किसी को छूत तथा किसी को अछूत मानते हैं। यह हमारे भारतीय समाज में विद्यमान है। महान् भयंकर! भारत के ब्राह्मण धर्म ने भारतवर्ष को पूर्णरूप से बरबाद कर दिया है। आप इस उदाहरण से शिक्षा ले सकते हैं कि महर्षि व्यास जिन्होंने गीता का सृजन किया कौन थे? वे एक मल्लाह कन्या की अवैध सन्तान थे। यही कारण था कि वे स्वेच्छा से इस प्रकार अवतरित हुये। उन सब ब्राह्मणों से जो गीता पाठ करते हैं पूछिये कि व्यासजी कौन थे। ब्राह्मण वे हैं जिन्होंने आत्म-साक्षात्कार किया है। आत्म-साक्षात्कार व्यक्ति के लिये ऐसी सब बातें कि कौन किस जाति, समाज में पैदा हुआ है निरर्थक एवं अनर्गल हैं। पश्चिम में पूर्ण शिक्षा और सर्व सम्पन्नता होते हुये भी रंग-जाति भेद नीति प्रचलित है, यह मैं नहीं समझ सकती। यदि कोई गोरा है अथवा काला अततः ईश्वर ने रंग में विविधता उत्पन्न की है। आपको किसने भ्रम में डाल दिया कि आप ही लोगों में अत्यधिक सुन्दर हैं। यहां अथवा हॉलीवुड ऐसे मार्कट हो सकते हैं। यह यहाँ फिट हो सकते हैं परन्तु ईश्वर के साम्राज्य में इन तथाकथित सुन्दरतम मनुष्यों तथा सात 2 बार विवाह करने वाले तथा अन्य ऐसे ही कुकर्मियों का प्रवेश निषेध है। वे नर्क में धकेल दिये जायेंगे। सुन्दरता हृदय की होती है न कि चेहरे की जो दिखाती है और चमकाती है। कदाचित कुछ लोग इसके प्रति किंचिन्मात्र सजग हों। यही कारण है कि लोग जाते हैं और अपने चेहरों की लीपा-पोती (tan) करते हैं। मुझे मालूम नहीं। वे पूर्ण सजग हैं परन्तु उनमें दिखावटीपन कुछ अधिक मात्रा में

प्रकट करते हैं। कुछ लोग काले बाल पसन्द करते हैं कुछ लाल रंग वाले। मेरा मतलब है कि सब प्रकार के बाल होने चाहिये। आप विशेष प्रकार के बाल ही क्यों पसन्द करें यह मैं नहीं समझ सकती। ऐसी कोई पसन्दगी और नापसन्दगी की बात नहीं है। जो भी ईश्वर ने रचना की है वह अप्रतिम है, अनुपम है। आप इसका निर्णय देने वाले कौन होते हैं कि ये वस्तुएं मुझे भाती हैं ये नहीं। यह मैं कौन है ? यह श्रीमन अहंकार है जो सोसाइटी द्वारा मिश्रित (tempered) किये जा रहे हैं, जो आपको सिखाती है कि सिगार किस प्रकार पिया जाता है तथा आप किस प्रकार प्रातः से सायं काल तक लगार (lagar) करते रहते हैं। ये सब शिक्षाएं तथा रूढ़िवादिताएं मैल सदृश्य बाहर फेंक देनी चाहिये। देखिये ईश्वर ने आप सबको अपने बच्चों की तरह ही बनाया है। यह एक ऐसी सुन्दरतम वस्तु है। आप इसे अपने भद्दे विचारों से असुन्दर बनाकर विकृत क्यों करना चाहते हैं। मैं पसन्द करता हूँ, नापसन्द करता हूँ ये भद्देपने की बातें निरर्थक हैं। सब कुछ भुला दो। केवल एक ही शब्द 'प्रेम' याद रहना चाहिये। यह बात स्मरण रखने की आवश्यकता नहीं कि ब्रिटिश ने भारतीयों के साथ क्या किया अथवा जर्मनों ने यहूदियों से कैसा बर्ताव किया सब कुछ भूल जाइये। वे लोग जिन्होंने ये सब अत्याचार किये मर चुके हैं। हम भिन्न प्रकार के हैं। हम सन्त हैं। यह सिद्धान्तों के लिये है। जैसा मैंने कहा है इसको आपने हृदयांकित करना है।

आज मैं आप को गुरू बनने के लिये प्रमाणित करती हूँ जिससे आप अपने चरित्र के बल से तथा व्यक्तित्व से किस प्रकार आप सहज योग का पालन करते हैं तथा अपने जीवन में उसके प्रकाश का फैलाव कहां तक करते हैं। अन्य लोग आपका अनुकरण करेंगे। आप उनके हृदयों में ईश्वरीय सिद्धान्तों को स्थापित करेंगे और उन्हें मुक्त (emancipate) करेंगे। आप उन्हें उनकी मुक्ति प्रदान करें क्योंकि आप स्वयं मुक्त हो चुके हैं। आप बिना स्रोत के स्रोत है यह सर्वव्यापी शक्ति क्रिया नहीं कर सकती। यह एक सिस्टम है। यदि आप सूर्य को देखते हैं तो उसका प्रकाश किरणों द्वारा प्रसारित होता है। आप के हृदय से धमनियों द्वारा रक्त संचालित होता है। वे छोटी से छोटी होती चली जाती हैं। आप धमनियां हैं जिनमें मेरे प्रेम का रक्त सब लोगों में संचालित होगा। यदि धमनियां टूट गई तो रक्त उन लोगों तक नहीं पहुँच पायेगा। अतः यही कारण है कि आप इतने विशिष्ट हैं। जितने बड़े भी आप बनेंगे उतनी ही बड़ी ये धमनियां हो जायेंगी। फिर आप अधिक मनुष्यों का दिग्दर्शन करायें इससे आप और अधिक जिम्मेदार हो जायेंगे। गुरु में गरिमा होनी चाहिये। गुरु का अर्थ भारी आकर्षण है। गुरुत्व के माने हैं भारोपन, आकर्षण। आपको अपने भार के अनुरूप होना चाहिये का अर्थ है आपके चरित्र का भार, आप की महिमा का भार, आपके व्यवहार का भार, आपकी श्रद्धा का भार, तथा आपका प्रकाश। आप अस्वाभाविक एवं अकृतिम साधनों से गुरु नहीं बने हैं। सस्तापन, अभद्रभाषा, सस्ता मजाक, क्रोध, उद्वेग आदि से आप अपना बचाव पूर्णतया करें। मृदुलता के भार का, अपनी जिह्वा के मिठास का, आपकी गरिमाका स्रोत लोगों को आप की ओर ऐसे आकर्षित करेगा, जैसे कि पुष्प जो पराग से लदा फदा सब ओर से मधु मक्खियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इसी प्रकार आपभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेंगे। इसके लिये आप फ़ख्र कीजिये। औरों के लिये सहानुभूति रखिये और उन की देखभाल करें।

अब संक्षेप में मैं आपको बताउंगी कि आपको स्वयं क्या करना है। आपको अपनी महामाया (void) को स्पष्ट करना है। सर्व प्रथम आपको अपनी महामाया की "पकड़ों" (catches) को जानना है। जब आप एक गलत गुरु के सम्पर्क में आते हैं। आपको अपने गुरु के सम्बन्ध में पूर्णतया जानकारी होनी चाहिये। अपने गुरु के

चरित्र के बारे में जानकारी का प्रयास कीजिये। यह एक दुष्कर कार्य है क्योंकि आपका गुरु बहुत ही मायावी है। वह महामाया है। इसका पार पाना आसान नहीं है। वह बहुत स्वाभाविक तरीके से व्यवहार करती है और कभी कभी आप चक्कर में आ जाते हैं। परन्तु आप देखेंगे कि वह छोटी वस्तु से भी व्यवहार करती हैं। कैसे उसका चरित्र प्रकट होता है, कैसे उसका प्रेम प्रकट होता है। उसकी क्षमा को स्मरण करने का प्रयास करें। फिर आपको जानना चाहिये कि आप के गुरु ऐसे हैं जिनको बहुत से लोगों ने धारण करने की इच्छा की थी तथा जो सब गुरुओं के उद्गम स्थल हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उत्कट अभिलाषा ऐसा गुरु धारण करने की होती है। वे सब आपके ईर्ष्यालु हैं। परन्तु यह गुरु बड़ा चतुर (elusive) है। सो अपनी माया में सुधार लाने हेतु कहिये कि "माता जी आप हमारी गुरु हैं"। इस चतुरता (elusiveness) के कारण वह भय, वह awe और वह सम्मान जो गुरु के प्रति आवश्यक है, स्थापित नहीं है। जबतक कि आप अपनी आंतरिक awe का विकास नहीं करते, तब तक आपका गुरु तत्व स्थापित नहीं हो सकता। किसी की आजादी नहीं ली जायेगी। मैं स्वयं ही आपको कह रही हूँ परन्तु मैं अत्यधिक elusive हूँ। दूसरे ही क्षण आपको हंसाऊंगी और इस बारे में भूल जाऊंगी क्योंकि मैं आपकी आजादी का परीक्षण कर रही हूँ इसे करने के लिये पूर्ण स्वतंत्रता। मैं आपके संग इस प्रकार की क्रीड़ा करती हूँ कि आप हर क्षण भूल जायेंगे कि मैं आपकी गुरु हूँ। प्रत्येक क्षण।

सो सबसे पूर्व आपको अपने गुरु की खोज करनी है। अपने हृदय में उसे स्थापित करो। मेरे कहने का तात्पर्य है कि आपका आश्चर्यजनक गुरु है। नहीं तो मुझे कहना चाहिये कि मेरी भी उत्कट इच्छा ऐसा गुरु वरण करने की होती है। और वह इच्छारहित एवं पापरहित है। बिल्कुल निष्पाप है। जो कुछ भी मैं करती हूँ वह मेरे लिये पाप नहीं है। मैं किसी का भी वध कर सकती हूँ, साजिश (intrigue) अथवा कुछ और भी कर सकती हूँ। मैं असल में कहती हूँ कि यह तथ्य है। कुछ भी करो मैं पाप से ऊपर हूं, परन्तु मैं इसको देखती हूँ कि आपकी उपस्थित में ऐसा कोई काम न करूं जिससे कि आप इन वस्तुओं में से कोई पा न लें। यह मेरा गुण है। आपका गुरु, निस्सन्देह सर्वोच्च है फिर भी आपको मालूम होना चाहिये कि ये महामहिम शक्तियां आपके पास नहीं हैं। मैं इन सब वस्तुओं से ऊपर हूँ। मैं नहीं जानती कि प्रलोभन क्या होता है। कुछ नहीं-मेरा मतलब है मैं करती हूँ।

मैं जो कुछ पसन्द करती हूँ वह मेरी धुन (whim) है परन्तु। इसके बावजूद भी मैंने अपने आपको स्वाभाविक बना लिया है। क्योंकि मुझे आपके सम्मुख इस प्रकार से होना चाहिये कि आपको समझ आजाये कि सिद्धान्त क्या है। मेरे लिये कोई सिद्धान्त नहीं है। मैं सिद्धान्त सृजन करती हूँ। मैं आपके लिये यह सब कार्य करती हूँ और छोटी छोटी चीजें सिखाती हूँ क्योंकि आप मेरे बच्चे हैं।

इसी प्रकार आपको स्मरण रखना चाहिये कि जब आप लोगों से सहजयोग के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे हों तो वे सारा समय आपको देखते रहेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि इसमें आपकी पैठ कितनी है। जैसा मैं आपको समझती हूँ आप भी उनको समझने का प्रयास करें। जैसा प्रेम मैं आप से करती हूँ वैसा ही प्रेम आप भी उनसे करें। निःसन्देह मैं आप से प्रेम करती हूँ परन्तु मैं निर्मला हूँ, मैं प्रेम से बाहर हूं, निर्लेप हूँ।

वर्तमान हालात के अन्दर आप बहुत बेहतर हैं क्योंकि कोई गुरु इस सीमा तक कभी नहीं जाता। इसके अतिरिक्त कि मैं सब शक्तियों का आदि स्रोत हूँ, सब ऊर्जाओं का भी। सो आप जो भी चाहें मेरे से शक्तियां, ऊर्जाएं ले सकते हैं। कामना रहित हूँ परन्तु आपकी जो भी कामनायें होंगी पूरी करूंगी। यहां तक कि मेरे लिये भी कामना करें और उसकी

ग्रोर देखिये कि मैं कितनी आपके बंधन में हूँ। जब तक कि आप मेरे अच्छे स्वास्थ्य के लिये कामना न करेंगे तब तक मेरा स्वास्थ्य भी खराब ही रहेगा परन्तु मुझे अच्छे और बुरे स्वास्थ्य एक समान हैं। ऐसे सुन्दर मनोरम हालात के अन्तर्गत आप वास्तव में इतनी समृद्धि और सम्पन्नता प्राप्त करें। आपको गुरू बनने के सम्बन्ध में आपकी कोई समस्या ही नहीं होगी।

अब माया अर्थात् भवसागर को स्थापित करना है अर्थात् उसकी स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। सर्वप्रथम तो आप इस बात को जानिये कि गुरु का और महामाया रूपी भवसागर का अधिकार, न्यूनाधिक रूप में, सभी चक्रों पर विराजते है। कल्पना कीजिये कि आपके गुरु कितने महान् शक्ति शाली हैं। इसी से आपका विश्वास सुदृढ़ हो गया तथा ऐसे महान प्रभृति गुरू की कृपा दृष्टि से, संकल्प मात्र से, प्रत्येक व्यक्ति इतनी सरलता पूर्वक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर रहा है। यदि आप किसी साहूकार अमीर आदमी के पास दान के लिये जायें और वह आपको दो पैसे भी नहीं देता है। वह इतनी अधिक शक्तिशाली है कि आप उसी प्रकार उनसे शक्ति एवं ऊर्जा प्राप्त करते जा रहे हैं। आप को इस उपलब्धि के लिये अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करना चाहिये—अत्याधिक प्रसन्न एवं मनोहारी सुन्दर कि आपके पास प्रचुरता से इतनी शक्तियां हैं। आखिरकार जो सहजयोग में रह चुके हैं अथवा हैं अवश्य ही इस तथ्य से अवगत होंगे अवश्य ही। जो व्यक्ति मेरे भाषण में पहिलो ही बार आये हैं वे कुछ थोड़े से भ्रम में पड़ सकते हैं। तुम सब तो इस बात से भली भांति परिचित हो कि यह क्या है।

आप अपनी गुरु शक्ति को समझने एवं परखने के लिये सर्वप्रथम यह जानिये की आप के गुरू कौन हैं——साक्षात आदि शक्ति। हे ईश्वर, यह तो अत्यधिक है। फिर आप भवसागर अर्थात् माया को स्थापित करें। एक गुरू किसी के सम्मुख भी अपना सिर नहीं झुकाता है। विशेषतया मेरा शिष्य-समुदाय। केवल अपनी माताओं, बहनों तथा कुछ सगेसम्बन्धियों के आगे ही अपना सिर झुकाते हैं। यदि यह वस्तुत: ऐसा ही है तो आप झुककर नमन कीजिये। परन्तु अन्य किसी के सामने भी झुककर नमन नहीं करना है।

दूसरी बात आप को जाननी है कि आपकी गुरु बहुत बड़े-बड़े लोगों की माँ रही हैं। यह विचार स्वयं ही गुरुतत्व (गुरु सिद्धान्त) को आपके अन्दर स्थापित कर देगा। कितने महान् प्रभृति मेरे सुपुत्र रहे हैं, कितने महान् व्यक्तित्व के स्वामी अर्थात् उनका जलवा कितना अधिक है। कोई शब्द उनका वर्णन नहीं कर सकता। और उनमें से बहुत से एक के पश्चात एक दूसरा। आपभी उसी रुढ़ि (tradition) से सम्बन्धित हैं। मेरे शिष्य इनको आदर्श मानते हैं। उनका अनुसरण करने का प्रयास कीजिये। उनके बारे में पढ़िये, उनको समझिये कि उन्होंने क्या कहा है तथा वे इतने उच्चस्तर पर किस प्रकार से पहुँचे हैं। उन्हें पहचानिये, उनका आदर सत्कार कीजिये। आप गुरु तत्व को स्थापित कर लेंगे।

सारे सिद्धान्तों को आत्मसात अपने ही भीतर कीजिए। उनके लिये फख्र कीजिये। लोगों की बातों में आकर भ्रमित न होइये। हम सर्वजन समुदाय को अपनी ओर खींचने जा रहे हैं। सबसे पहिले तो हमें अपने भार और आकर्षण को स्थापित करने दीजिये। जिस भांति धरती माता अपने गुरुत्वाकर्षण द्वारा प्रत्येक को अपनी मृतिका की ओर खींचती रहती हैं हम भी उन सब को अपने स्वयं की ओर खींच लेंगे।

आज आप सबने अपने आप में अपनी आत्मा से संकल्प (promise) करना है कि आप गुरू होंगे और अपनी सुयोग्य माताजी के अनुरूप। अर्थात् आप गुरु बनने का वायदा अपनी आत्मा से करेंगे तथा अपनी सुयोग्य माताजी के अनुरूप ही गुरुतत्व धारण करेंगे।

ईश्वर आपको सकुशल रखें।

ॐ श्री माता जी निर्मला माँ नमो नमः

जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय निर्मला माँ ! जय हे ।
सकल क्लेश विनाशिनी माँ, जय हे,
जय मुक्ति दायिनि माँ, जय हे ।
जय ज्ञानदायिनि माँ, जय हे,
जय शक्तिदायिनि माँ, जय हे ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय निर्मला माँ ! जय हे ॥ १ ॥
भव-भय हारिणि माँ, जय हे,
जय पतित-पावनि माँ, जय हे ।
तत्वदर्शिनि माँ, जय हे,
जय सर्वस्व रूपिणि माँ, जय हे ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय निर्मला माँ ! जय हे ॥ २ ॥
जगकारिणि माँ, जय हे,
जय जग तारिणि माँ, जय हे ।
जगत् जननी माँ, जय हे,
जय जगदम्बा माँ, जय हे ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय निर्मला माँ ! जय हे ॥ ३ ॥
सत्य रूपिणी माँ, जय हे,
जय ज्ञानरूपिणी माँ, जय हे ।
ज्योतिरूपिणी माँ, जय हे,
जय अमृतवर्षिनि माँ, जय हे ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय निर्मला माँ ! जय हे ॥ ४ ॥
महालक्ष्मी माँ, जय हे,
जय महासरस्वती माँ, जय हे ।
महाकाली माँ, जय हे,
जय आदिकुण्डलिनी माँ, जय हे ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय आदिशक्ति ! निर्मला माँ ! जय हे ॥ ५ ॥
ॐ शांति, शांति, शांति,

सी. एल. पटेल

आरती

सबको दुआ देना मां, सबको दुआ देना। जय निर्मल माताजी, जय निर्मल माता जी ॥
दिल में सदा रहना, मां सबको दुआ देना !

जग में सङ्कट कारन कितने लिए अवतार, मां कितने लिए अवतार।
विश्व में तेरी महिमा, विश्व में तेरी महिमा, तू गंगा यमुना ॥
मां सबको दुआ देना, सबको दुआ···

जो भी सरन में आया, सुख ही मिला उसको, मां सुख ही मिला उसको।
बैठ के दिल में ओ मां, बैठ के दिल में ओ मां, लौट के ना जाना ॥
मां सबको दुआ देना, सबको दुआ···

मानव में अवतर के कर दिया उजियाला, मां कर दिया उजियाला।
कलियुग में माया है, कलियुग में माया है फिर भी पहचाना ॥
मां सबको दुआ देना, सबको दुआ···

सन्त जनों की धरती है भारत माता, मां है भारत माता।
इस धरती पर आके, इस धरती पर आके, दुःख से दूर करना ॥
मां सबको दुआ देना, सबको दुआ···

जब दिल में आवे तब मधुर संगीत सुन लो, मां मधुर संगीत सुन लो।
होय सके जो सेवा, होय सके जो सेवा, मां हम से करा लेना ॥
मां सब को दुआ देना, सबको दुआ···

सब को दुआ देना मां, सबको दुआ देना ॥ जय निर्मल माता जी।

मन्त्र

ओम् त्वमेव साक्षात्, श्री महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली,
त्रिगुणात्मिका, कुण्डलिनी साक्षात्, श्री आदिशक्ति,
श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

ओम् त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री आदिशक्ति,
श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

ओम् त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी माता जी, श्री निर्मलादेवी नमो नमः ॥
श्री निर्मला देवी नमो नमः।
श्री निर्मला देवी नमो नमः।
श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

With

best

compliments

MUKAL PARKASHAN

J/2, KAILASH COLONY

NEW DELHI-110019

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 5.00, Annual Subscription Rs. 20.00 Foreign [By Airmail £ 4 $ 8]